# विश्व हिंदी समाचार

# Vishwa Hindi Samachar

विश्व हिंदी सचिवालय, मॉरीशस का त्रैमासिक सूचना-पत्र

वर्ष : 13 | अंक : 51 | सितंबर, 2020

## विश्व भर में हिंदी दिवस 2020 का आयोजन

प्रति वर्ष विश्व हिंदी समुदाय 14 सितंबर को हिंदी दिवस मनाता है। इस वर्ष भी परम्परागत रूप से भारत तथा मॉरीशस के साथ-साथ विश्व के अनेक देशों में हिंदी दिवस भव्य रूप से मनाया गया। विश्व भर में हिंदी दिवस के आयोजन की झलकियाँ विश्व हिंदी समाचार के इस अंक में पाठकों के समक्ष प्रस्तुत की जा रही हैं।

पृ. 2-4

## हिंदी से संबंधित ऑनलाइन कार्यक्रम एवं गतिविधियाँ

वर्ष 2019 से कोरोना के प्रकोप के कारण जहाँ पूरा विश्व तालाबंदी का शिकार हुआ, वहीं इस महामारी की चुनौती को अवसर में बदलते हुए हिंदी जगत ने वर्चुअल और डिजिटल दुनिया को अपनाते हुए अभासी मंचों के माध्यम से कई ऑनलाइन कार्यक्रम एवं गतिविधियों का आयोजन किया और यह प्रयोग अभी तक जारी है। विश्व हिंदी समाचार के इस अंक में विभिन्न ऑनलाइन आयोजनों की सूचनाएँ पाठकों के समक्ष प्रस्तुत की जा रही हैं।

## भाषा विमर्श : 'भारतीय भाषाएँ और शिक्षा नीति' वेब संगोष्ठी

9 अगस्त, 2020 को विश्व हिंदी सचिवालय और वैश्विक हिंदी परिवार द्वारा भाषा विमर्श - श्रृंखला-8 – 'भारतीय भाषाएँ और शिक्षा नीति' पर वेब संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी के मुख्य वक्ता पत्रकार व साहित्यकार श्री राहुल देव, भाषावैज्ञानिक श्री प्रेमपाल शर्मा, शिक्षाविद् श्री अशोक पाण्डेय और श्री अनिल जोशी थे।

पृ. 5

## 'हिंदी भाषा के विकास में पत्र-पत्रिकाओं का योगदान' - ऑनलाइन व्याख्यान माला

26 अगस्त, 2020 को उच्च शिक्षा और शोध संस्थान, दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, मद्रास के आंतरिक गुणवत्ता प्रमाणन प्रकोष्ठ एवं पी जी विभाग, हैदराबाद के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित 'हिंदी भाषा के विकास में पत्र-पत्रिकाओं का योगदान' विषयक ऑनलाइन व्याख्यान माला संपन्न हुई।

पृ. 6

## न्यूज़ीलैंड में ऑनलाइन हिंदी उत्सव

12 सितंबर, 2020 को न्यूज़ीलैंड से प्रकाशित भारत-दर्शन ऑनलाइन हिंदी पत्रिका ने हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में एक ऑनलाइन हिंदी उत्सव का आयोजन किया।

पृ. 8-9

## त्रैमासिक पत्रिका 'नया भाषा भारती संवाद' का लोकार्पण

9 जुलाई, 2020 को बिहार हिंदी साहित्य सम्मेलन में साहित्यिक समाचारों की त्रैमासिक पत्रिका 'नया भाषा भारती संवाद' के 20 वें वर्ष के चौथे अंक का लोकार्पण किया गया।

पृ. 14

## डॉ. मृदुला झा का निधन

9 अगस्त, 2020 को वरिष्ठ साहित्यकार डॉ. मृदुला झा का 73 वर्ष की आयु में निधन हो गया। आप बैजनाथ बालिका इंटर स्कूल की पूर्व प्राचार्या तथा मैथिली परिषद् की पूर्व अध्यक्षा थीं। विश्व हिंदी सचिवालय की ओर से दिवंगत आत्मा को भावभीनी श्रद्धांजलि।

पृ. 14


इस अंक में आगे पढ़ें :

वेबिनार / ऑनलाइन गोष्ठी / लोकार्पण पृ. 4-13, पृ. 14
श्रद्धांजलि पृ. 14
संपादकीय पृ. 15-16


ISSN 16942485

# हिंदी दिवस 2020

## झारखण्ड, भारत

14 सितंबर, 2020 को समाहरणालय सभागार, झारखण्ड में हिंदी दिवस का आयोजन किया गया। उपायुक्त श्री कमलेश्वर प्रसाद सिंह ने संगोष्ठी की अध्यक्षता की। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए उपायुक्त श्री कमलेश्वर प्रसाद सिंह ने कहा कि भाषा संचार का वह सशक्त माध्यम है, जिससे कोई भी समाज अपना ज्ञान, संस्कृति और संस्कार भावी पीढ़ियों तक पहुँचाता है तथा देश की भाषायी एकता के लिए यह स्वर्णिम अवसर है, जब हिंदी और भारतीय भाषाओं के बीच समृद्ध और स्वस्थ समन्वय स्थापित किया जा सकता है।

कार्यक्रम के दौरान अपर समाहर्ता श्री चंद्र भूषण प्रसाद सिंह ने हिंदी भाषा के अधिक से अधिक प्रयोग पर बल दिया। ज़िला जनसम्पर्क पदाधिकारी श्री रवि कुमार ने राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की वाणी को दोहराते हुए हिंदी भाषा को जनमानस की भाषा बताया। श्रीमती नयन तारा केरकेट्टा ने कहा कि हिंदी से ही भारतीय संस्कृति की पहचान है।

*साभार : झारखण्ड न्यूज़.कॉम*

## हिंदी प्रचारिणी सभा, मॉरीशस

19 दिसंबर, 2020 को लोंग माउंटेन में हिंदी प्रचारिणी सभा, मॉरीशस द्वारा हिंदी दिवस तथा समावर्तन समारोह का आयोजन किया गया। समारोह विश्व हिंदी सचिवालय के महासचिव, प्रो. विनोद कुमार मिश्र की अध्यक्षता और भारतीय उच्चायोग की द्वितीय सचिव, श्रीमती सुनीता पाहूजा के विशेष आतिथ्य में संपन्न हुआ। सांसद, माननीया श्रीमती सुभाषिनी रॉय तथा श्री विनय दसोय अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। कार्यक्रम के दौरान छात्रों द्वारा शास्त्रीय नृत्य तथा कविता -पाठ हुआ। सभा के प्रधान श्री धनराज शम्भु ने सभा की गतिविधियों पर बात की। श्रीमती पाहूजा ने भारतीय उच्चायोग से समर्थन का आश्वासन दिया। श्रीमती सुभाषिनी रॉय ने सभी छात्रों को प्रोत्साहित किया। प्रो. मिश्र ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में बताया कि हिंदी में भी प्रौद्योगिकी और संचार को लेकर भारी प्रगति हो रही है और हिंदी का भविष्य उज्ज्वल है। इस अवसर पर श्रीमती बिद्वंती शम्भु की पुस्तक 'इंद्रधनुष' का लोकार्पण उपस्थित अतिथियों के हाथों संपन्न हुआ। साथ-साथ हिंदी भाषा व संस्कृति के प्रचार-प्रसार में योगदान देनेवाले लोगों को 'हिंदी प्रचारिणी सम्मान' से विभूषित किया गया तथा आयोजित निबंध प्रतियोगिता के विजेताओं को पुरस्कृत किया गया।

*श्री धनराज शम्भु की रिपोर्ट*

## बर्मिंघम, इंग्लैंड

14 सितंबर, 2020 को भारत के वाणिज्य दूतावास, बर्मिंघम, इंग्लैंड द्वारा वर्चुअल रूप से हिंदी दिवस मनाया गया। समारोह के दौरान हिंदी निबंध प्रतियोगिता के विजेताओं को पुरस्कृत किया गया। इस अवसर पर कविता-पाठ और भाषण भी हुए। महावाणिज्य दूत डॉ. शशांक विक्रम ने दुनिया भर में हिंदी की प्रासंगिकता के बारे में बात की और प्रतियोगिता के विजेताओं को बधाई दी।

*साभार : भारतीय महावाणिज्य दूतावास, बर्मिंघम का वेबसाइट*

## फ्रेंकफ़र्ट, जर्मनी

14 सितंबर, 2020 को फ्रेंकफ़र्ट, जर्मनी में प्रधान कौंसुलावास में हिंदी दिवस का आयोजन किया गया। समारोह के मुख्य अतिथि श्री राम यादव ने स्वतंत्र भारत में हिंदी भाषा की स्थिति पर अपने विचार प्रस्तुत किए। इस अवसर पर निबंध और कविता प्रतियोगिता के विजेताओं को पुरस्कृत किया गया। डुइसबर्ग-ऐस्सेन विश्वविद्यालय के भारतीय छात्र समूह द्वारा मंचित ऑनलाइन लघु नाटिका कार्यक्रम का आकर्षण रहा।

*साभार : भारतीय महावाणिज्य दूतावास, फ्रेंकफ़र्ट का वेबसाइट*

## लंदन

14 सितंबर, 2020 को भारतीय उच्चायोग, लंदन में हिंदी दिवस का ऑनलाइन आयोजन किया गया। कार्यक्रम में उपउच्चायुक्त श्री चरणजीत सिंह द्वारा माननीय गृह मंत्री का संदेश पढ़ा गया। उन्होंने अपने वक्तव्य में कहा कि भारत का उच्चायोग, लंदन, ब्रिटेन में हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए प्रतिबद्ध है और इस दिशा में हर संभव प्रयास किए जा रहे हैं। उन्होंने यह भी कहा कि आज हिंदी का प्रसार पूरी दुनिया में तीव्र गति से हो रहा है और इसमें प्रवासी संसार में रहनेवाले भारतीयों का महत्वपूर्ण योगदान है। भारतीय विद्या भवन के निदेशक श्री नंद कुमार ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि हिंदी केवल एक भाषा नहीं, हमारी पहचान भी है। ब्रिटिश सांसद श्री वीरेंद्र शर्मा ने भी इस मौके पर उपस्थित सभी लोगों को बधाई दी और कहा कि हिंदी कार्यक्रमों से उन्हें काफ़ी कुछ सीखने को मिलता है, इसलिए वे अक्सर इनमें शिरकत करना चाहते हैं।

इस अवसर पर कवि सम्मेलन का भी आयोजन किया गया, जिसमें श्री तेजेंद्र शर्मा, श्री पद्मेश गुप्त, श्रीमती ज़किया ज़ुबैरी, श्रीमती अरुणा सभरवाल, श्रीमती जय वर्मा, श्रीमती शिखा वार्ष्णेय, श्रीमती इंदु बरोत, श्रीमती ऋचा जैन जिंदल, श्रीमती मिनी नारंग, श्रीमती तिथि दानी, श्री आशीष मिश्र, श्री आशुतोष कुमार चौधरी, श्री धर्मराज मीणा, श्री अभिषेक त्रिपाठी और श्री तरुण कुमार शामिल हुए। कार्यक्रम का संचालन अताशे (हिंदी व संस्कृति), श्री तरुण कुमार द्वारा किया गया। धन्यवाद-ज्ञापन नेहरू केंद्र के उपनिदेशक श्री बृज गुहारे ने किया।

*साभार : भारतीय उच्चायोग, लंदन का फ़ेसबुक पृष्ठ*

## सिडनी, ऑस्ट्रेलिया

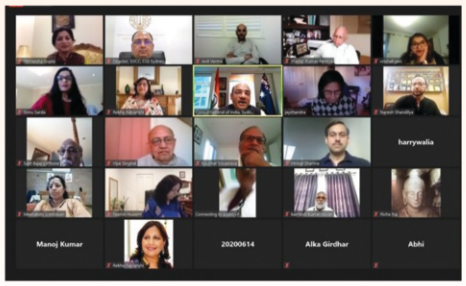


14 सितंबर, 2020 को स्वामी विवेकानन्द सांस्कृतिक केंद्र, भारतीय कौंसुलावास, भारतीय साहित्य और कला संस्था, भारतीय विद्या भवन तथा अन्य सहयोगी संस्थाओं द्वारा संयुक्त रूप से हिंदी दिवस मनाया गया। इस अवसर पर वर्चुअल कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया, जिसमें सिडनी एवं भारत स्थित कई कवियों ने प्रतिभागिता की।

*साभार : भारतीय कौंसुलावास, सिडनी का फ़ेसबुक पृष्ठ*

## थिम्फू, भूटान

14 सितंबर, 2020 को इंडिया हाउस ऑडिटोरियम, थिम्फू, भूटान में वहाँ के भारतीय राजदूतावास द्वारा हिंदी दिवस का भव्य आयोजन किया गया। समारोह के दौरान आयोजित निबंध, वाद-विवाद, कविता-पाठ प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कृत किया गया। इस अवसर पर सांस्कृतिक कार्यक्रम भी आयोजित किया गया। कार्यक्रम में कई हिंदी प्रेमियों की भागीदारी रही।

*साभार : भारतीय राजदूतावास, थिम्फू का फ़ेसबुक पृष्ठ*

## टोरोंटो, कनाडा

14 सितंबर, 2020 को हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में अखिल विश्व हिंदी समिति, टोरोंटो, कनाडा द्वारा भारतीय कौंसुलावास, टोरोंटो व सहयोगी संस्थाओं के साहचर्य में भव्य 'ई-विश्व हिंदी साहित्य सम्मेलन' का आयोजन किया गया। भारतीय कौंसुलाधीश माननीया अपूर्वा श्रीवास्तव समारोह की मुख्य अतिथि रहीं। डॉ. वेद प्रकाश गौड़, पूर्व निदेशक, राजभाषा विभाग, संस्कृति मंत्रालय, डॉ. युवराज सिंह युवा, हिंदी विभागाध्यक्ष, राजा बलवंत सिंह महाविद्यालय, आगरा एवं श्री भगवत शरण श्रीवास्तव, पूर्व अध्यक्ष, हिंदी साहित्य सभा, कनाडा कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि रहे।

सुप्रसिद्ध साहित्यकार व अंतरराष्ट्रीय हिंदी समिति, भारत के अंतरराष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. दाऊजी गुप्त ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। सभी साहित्यकारों, कवियों व कवयित्रियों ने एक-एक कर 'हिंदी दिवस' व हिंदी पर अपने उद्गार व्यक्त किए और अपनी रचनाओं का पाठ किया।

माननीया अपूर्वा श्रीवास्तव ने हिंदी दिवस पर अपने उद्गार व्यक्त किए, साहित्य के तकनीकी माध्यमों से प्रचार-प्रसार व प्रयोग पर बल दिया और साहित्य के बहुमुखी विकास के लिए अपनी प्रतिबद्धता जताई। उन्होंने भारतीय कौंसुलावास की ओर से हिंदी के विकास व उन्नयन के लिए हर संभव सहायता देने का आश्वासन दिया। कार्यक्रम में लगभग 40 साहित्यकारों की सहभागिता रही। सम्मेलन का संचालन अखिल विश्व हिंदी समिति, आध्यात्मिक प्रबंध पीठ व मधु प्रकाशन, टोरोंटो के अध्यक्ष, हिंदी साहित्य सभा के महासचिव एवं अंतरराष्ट्रीय हिंदी समिति, भारत के कनाडाई अध्यक्ष श्री गोपाल बघेल 'मधु' ने किया। फ़्रीडम योगा व संस्कृत योग सभा, कनाडा के अध्यक्ष आचार्य संदीप त्यागी सहायक संचालक रहे।

*अखिल विश्व हिंदी समिति, टोरोंटो, कनाडा की रिपोर्ट*

## सिंगापुर

13-19 सितंबर, 2020 को भारतीय उच्चायोग, सिंगापुर और विश्व हिंदी सचिवालय मॉरीशस के सहयोग से 'संगम सिंगापुर' द्वारा हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में 'हिंदी सप्ताह-2020' का आयोजन किया गया। इस ऑनलाइन कार्यक्रम के मुख्य अतिथि सिंगापुर में भारतीय उच्चायुक्त, श्री पी. कुमारन रहे। उन्होंने इस अवसर पर सभी प्रतिभागियों को प्रोत्साहित करते हुए अपनी शुभकामनाएँ दीं। साथ ही सिंगापुर में भाषा, कला और संस्कृति को बढ़ावा देने वाले ऐसे कार्यक्रमों को भारतीय उच्चायोग की ओर से समर्थन और सहयोग देने का आश्वासन भी दिया। विशिष्ट अतिथि विश्व हिंदी सचिवालय के महासचिव प्रो. विनोद कुमार मिश्र ने कार्यक्रम में भाग लेने वाले सभी बच्चों को अपनी शुभकामनाएँ दीं और हिंदी भाषा के प्रति गर्व और गौरव की अनुभूति करने के महत्व को रेखांकित भी किया और कहा कि इस तरह के आयोजनों से भावी पीढ़ी और प्रवासी भारतीयों में हिंदी के प्रति प्रेम और जागरूकता अधिक बढ़ेगी।

इस अवसर पर हिंदी काव्य-वाचन, गद्यांश या कहानी वाचन प्रतियोगिताएँ तथा निबंध प्रतियोगिता आयोजित की गई थी, जिनमें 21 सिंगापुर के छात्र और 11 भारतीय छात्र विजेता बने। कार्यक्रम के अंत में संगम सिंगापुर संस्था की संस्थापिका और सिंगापुर संगम पत्रिका की संपादिका डॉ. संध्या सिंह ने सभी उपस्थित प्रतिभागियों और दर्शकों से अपनी मातृभाषा के साथ-साथ हिंदी भाषा के प्रयोग का आग्रह किया।

'हिंदी सप्ताह - 2020' के दूसरे दिन डॉ. लतिका

रानी द्वारा लोकगीत प्रस्तुति हुई। हिंदी सप्ताह के तीसरे दिन सिंगापुर के साहित्यकार श्री राजेन्द्र सूरज ने 'मेरी भाषा और मैं' विषय पर अपने प्रेरणादायक विचार रखे। अपने जीवन के विभिन्न प्रसंगों के माध्यम से उन्होंने बताया कि किस तरह छोटे-छोटे बदलावों से हिंदी भाषा को हम अपने सामान्य जीवन में अधिकाधिक प्रयोग में ला सकते हैं। हिंदी सप्ताह के चौथे दिन नेशनल यूनिवर्सिटी की शोधार्थिनी मोहिनी मेहता और हिंदी अध्यापिका, डॉ. लतिका रानी ने कविताओं और गीतों की अन्त्याक्षरी के माध्यम से सुप्रसिद्ध साहित्यकारों की रचनाओं की प्रस्तुति की। हिंदी सप्ताह के पाँचवें दिन हिंदी अध्यापिका, बीना मिश्रा ने 'चीफ़ की दावत' कहानी के माध्यम से परिवार में बुज़ुर्गों की उपेक्षा की ओर सब का ध्यानाकर्षित किया। हिंदी सप्ताह के छठे दिन को पूर्व पत्रकार और लेखिका, आराधना झा श्रीवास्तव ने कोरोनाकाल में स्वास्थ्यकर्मियों को समर्पित अपनी लघु संवाद नाटिका 'राहत की दवा' की एकल प्रस्तुति की। हिंदी सप्ताह के अंतिम दिन वैदेही बोधनकर और लीम जिए टिमती के साक्षात्कार की रोचक प्रस्तुति की गयी। नेशनल यूनिवर्सिटी ऑफ़ सिंगापुर में कंप्यूटर साइंस के तृतीय वर्ष के छात्र साक्षी प्रद्युम्न ने कार्यक्रम का संचालन किया।

*सिंगापुर संगम से डॉ. संध्या सिंह की रिपोर्ट*

## न्यू जर्सी, अमेरिका

20 सितम्बर, 2020 को न्यू जर्सी, अमेरिका स्थित युवा हिंदी संस्थान द्वारा विश्व हिंदी सचिवालय, मॉरीशस और अमेरिका की हिंदी संगम फ़ाउंडेशन और शिक्षायतन नामक संस्थाओं के सहयोग से वर्चुअल हिंदी दिवस समारोह का आयोजन किया गया। समारोह की सबसे बड़ी विशेषता यह रही कि युवा हिंदी संस्थान के शिक्षार्थियों ने इसे फ़ॉल सेमेस्टर कार्यक्रम के प्रथम दिवस के रूप में मनाया। इस अवसर पर छात्रों ने कविता-पाठ किया तथा हिंदी ज्ञान का परिचय भी प्रस्तुत करते हुए हिंदी बोलने, लिखने और पढ़ने की क्षमता को बढ़ाने की इच्छा व्यक्त की। समारोह के आयोजक श्री अशोक ओझा ने हिंदी दिवस के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि यह दिन हम सबको हिंदी के प्रचार-प्रसार की याद दिलाता रहता है, क्योंकि 14 सितंबर 1949 को स्वतंत्र भारत की संविधान सभा ने देवनागरी लिपि में प्रयुक्त हिंदी भाषा को भारत की राजभाषा के रूप में स्वीकार किया था और एक वर्ष बाद सन् 1950 में हिंदी को राजभाषा के रूप में विधिवत भारतीय संविधान में शामिल किया गया। उन्होंने कहा कि दुनिया भर में हिंदी शिक्षण को आगे बढ़ाने के लिए सतत प्रयत्नशील रहना सबका कर्तव्य है।" 'शिक्षायतन' संस्था की प्रमुख और हिंदी संगम प्रतिष्ठान की ट्रस्टी, श्रीमती पूर्णिमा देसाई ने अपने वक्तव्य में कहा कि हिंदी भाषा में अपने भाव व्यक्त करना और उसे दैनिक बोलचाल का अंग बनाना माँ सरस्वती का आदर करने जैसा है तथा हिंदी सरल और मधुर भाषा है, जिसका व्यापक प्रयोग करना सबका कर्तव्य है। न्यू जर्सी के भूतपूर्व विधायक और युवा हिंदी संस्थान के सभापति, श्री उपेंद्र चिवुकूला ने हिंदी को व्यापार और वाणिज्य के लिए आवश्यक बताते हुए कहा कि हिंदी अमेरिका में प्रमुख विदेशी भाषा का स्थान ग्रहण कर चुकी है, जिसका और विस्तार होना चाहिए। समारोह के आयोजक युवा हिंदी संस्थान के अध्यक्ष श्री अशोक ओझा ने हिंदी दिवस और संस्थान द्वारा संचालित हिंदी कार्यक्रमों का विवरण भी दिया। इस आयोजन में न्यू जर्सी के अतिरिक्त, पेन्सिलवेनिया, डेलावेयर, न्यू यॉर्क प्रदेशों में रहने वाले भारतीय मूल के सदस्यों के साथ कई हिंदी शिक्षार्थी शामिल हुए।

*युवा हिंदी संस्थान से श्री अशोक ओझा की रिपोर्ट*

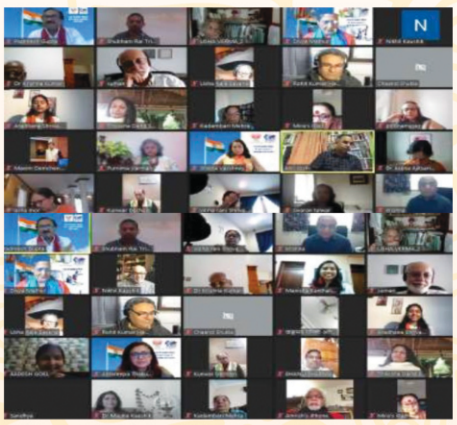

## गोष्ठी / वेबिनार / ऑनलाइन गोष्ठी / जयंती

### अंतरराष्ट्रीय कवि सम्मेलन

15 अगस्त, 2020 को स्वतंत्रता दिवस के उपलक्ष्य में वातायन-यू.के., वैश्विक हिंदी परिवार और यू.के. हिंदी समिति द्वारा ज़ूम के वर्चुअल पटल पर अंतरराष्ट्रीय कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया, जिसमें कई कवियों ने अपनी कविताओं का पाठ किया। केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा के उपाध्यक्ष श्री अनिल जोशी कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि रहे तथा अध्यक्षता वरिष्ठ कवि श्री कुंवर बेचैन ने की। श्री अनिल जोशी ने अपनी कविता का पाठ किया तथा कहा कि इस आयोजन में प्रवासी कविताओं का अत्यंत सुंदर प्रतिनिधित्व देखने को मिलता है। श्री कुंवर बेचैन ने सभी कवियों की प्रस्तुति को सराहते हुए कहा कि विश्व के अनेक देशों के सभी प्रतिनिधियों की रचनाओं में भारत की मिट्टी की महक देखने को मिली और उनके अनुसार

भारत का नागरिक जहाँ भी जाता है, भारत की महक उसके साथ ही रहती है। समारोह में नीदरलैंड से डॉ. पुष्पिता अवस्थी, न्यूज़ीलैंड से श्री रोहित कुमार हैप्पी, यू.ए.ई. से श्रीमती पूर्णिमा वर्मन, रूस से डॉ. मेक्सीम देमचेन्को, बुल्गारिया से डॉ. मोना कौशिक, कनाडा से डॉ. शैलजा सक्सेना, डेनमार्क से चाँद शुक्ल हैदराबादी, ऑस्ट्रेलिया से श्रीमती रेखा राजवंशी, त्रिनिदाद एंड टोबेगो से श्रीमती आशा मोर, सिंगापुर से श्रीमती आराधना श्रीवास्तव, चीन से डॉ. अनीता शर्मा, केनिया-अफ़्रीका से श्रीमती मनीषा कांथालिया तथा यू.के. से डॉ. निखिल कौशिक ने कविता-पाठ किया। समारोह का संचालन ऑक्सफ़ोर्ड से हिंदी समिति के संस्थापक और कवि डॉ. पद्मेश गुप्त ने किया तथा धन्यवाद-ज्ञापन वातायन की अध्यक्षा श्रीमती मीरा कौशिक ने किया।

*साभार : वातायन*

## भाषा विमर्श - श्रृंखला-8 – 'भारतीय भाषाएँ और शिक्षा नीति' वेब संगोष्ठी

9 अगस्त, 2020 को विश्व हिंदी सचिवालय और वैश्विक हिंदी परिवार द्वारा भाषा विमर्श - श्रृंखला-८ – 'भारतीय भाषाएँ और शिक्षा नीति' पर वेब संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी के मुख्य वक्ता पत्रकार व साहित्यकार श्री राहुल देव, भाषावैज्ञानिक श्री प्रेमपाल शर्मा, शिक्षाविद् श्री अशोक पाण्डेय और श्री अनिल जोशी थे। संगोष्ठी के आरंभ में श्री राजेश कुमार ने सभी वक्ताओं का स्वागत किया। अपने वक्तव्य में श्री अशोक पाण्डेय ने मातृभाषा में शिक्षा की अनिवार्यता का उल्लेख करते हुए भारत में भाषा की परंपरा को समृद्ध बताया। श्री प्रेमपाल शर्मा ने अपनी खुशी जताते हुए कहा कि इस शिक्षा नीति में मातृभाषाओं या भारतीय भाषाओं की बात को बहुत अच्छे ढंग से रेखांकित किया गया है। श्री राहुल देव ने अपने वक्तव्य में कहा कि बहुत बड़ी संख्या में राज्यों को अपनी-अपनी भाषा में शिक्षित बनाना होगा, तभी भाषा शिक्षकों के लिए रोज़गार के नए अवसर खुलेंगे। श्री अशोक पाण्डेय ने कहा कि यह नीति एक उद्देश्य है और अब ये हमारे ऊपर है कि हम इसको कैसे आत्मसात करते हैं। श्री विजय कुमार मल्होत्रा ने कार्यक्रम के बारे में अपनी टिप्पणी दी। कार्यक्रम का संचालन श्री राजेश कुमार ने किया।

*आभार : वैश्विक हिंदी परिवार*

## 'छायावाद के सौ वर्ष एवं पद्मश्री पं. मुकुटधर पाण्डेय' पर अंतरराष्ट्रीय वेबिनार

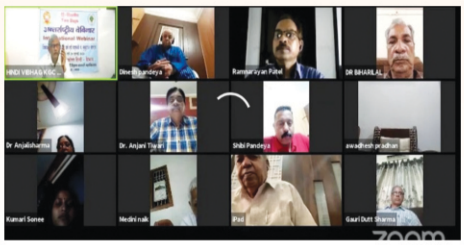

28-29 जुलाई, 2020 को स्थानीय किरोड़ीमल शासकीय कला एवं विज्ञान महाविद्यालय द्वारा स्नातकोत्तर हिंदी विभाग के तत्वावधान में 'छायावाद के सौ वर्ष एवं पद्मश्री पं. मुकुटधर पाण्डेय' विषय पर केंद्रित द्विदिवसीय अंतरराष्ट्रीय वेबिनार का आयोजन किया गया। समारोह के मुख्य अतिथि मध्य प्रदेश शासन के पूर्व मुख्य सचिव एवं गुरु घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर के प्रथम कुलपति श्री शरद चंद्र बेहार आई.एस. ने विषय केंद्रित अपने वक्तव्य में पंडित मुकुटधर पांडेय को एक विद्रोही कवि निरूपित किया। पद्मश्री श्रीनिवास उद्गाता ने छायावादी साहित्य को अत्यंत मानवीय करुणा प्रसूत साहित्य के रूप में रेखांकित किया। तदुपरांत तकनीकी सत्र के दौरान बनारस हिंदू विश्वविद्यालय के सेवानिवृत्त प्राध्यापक व साहित्यकार, समालोचक डॉ. अवधेश प्रधान ने पं. मुकुटधर पाण्डेय को छायावाद के प्रवर्तक साहित्यकार के रूप में दर्शाया। विश्व हिंदी सचिवालय, मॉरीशस के महासचिव प्रो. विनोद कुमार मिश्र ने अपने उद्बोधन में छायावाद की समग्र विशेषताओं पर प्रकाश डाला एवं पं. मुकुटधर को इस काव्य-धारा का जनक निरूपित किया। महाविद्यालय के पूर्व हिंदी विभागाध्यक्ष डॉ. बिहारी लाल साहू ने छायावाद के प्रमुख कवियों के साहित्यिक अवदान पर विस्तृत और अत्यंत रोचक जानकारियाँ साझा कीं। पोलैंड से डॉ. सुधांशु शुक्ल ने इस वेबिनार को एक महायज्ञ के रूप में रेखांकित करते हुए छायावाद पर विस्तृत रूप से प्रकाश डाला। प्रो. दिनेश पाण्डेय ने 'कुर्री के प्रति' कविता का पाठ करते हुए कहा कि इस कविता में कवि ने 40 से अधिक प्रश्न उठाए हैं, जिसके जवाब अभी तलाशना बाकी है। द्वितीय दिवस के मुख्य अतिथि पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर के कुलपति डॉ. केशरीलाल वर्मा रहे। उन्होंने छायावादी साहित्य के समस्त प्रमुख विशेषताओं पर प्रकाश डाला। पं. ईश्वर शरण पाण्डेय ने पं. मुकुटधर पाण्डेय और शेली के काव्यगत वैशिष्ट्य का तुलनात्मक तथ्य प्रस्तुत किया। तदुपरांत छत्तीसगढ़ी राजभाषा आयोग के पूर्व अध्यक्ष प्रतिष्ठित साहित्यकार डॉ. विनय कुमार पाठक ने पं. मुकुटधर पाण्डेय के छायावादी कवि रूप के साथ-साथ उनकी राष्ट्रीय चेतना युक्त रचनाओं पर प्रकाश डाला। जर्मनी से डॉ. राम प्रसाद भट्ट ने छायावाद युगीन भारतीय एवं यूरोपीय साहित्य का तुलनात्मक विश्लेषण करते हुए यूरोपियन सत्तावादी साहित्य के संदर्भ में भारतीय परिवेश को भिन्न संदर्भों में निरूपित किया। कवयित्री डॉ. मोना कौशिक ने अपने उद्बोधन में छायावादी काव्य की विशेषताओं पर विस्तृत चर्चा की, साथ ही पं. मुकुटधर पाण्डेय की कविता 'महानदी' का पाठ करते हुए उसमें छायावादी सौंदर्य का रेखांकन किया। साहित्यकार पं. रविशंकर शुक्ल ने अपनी विचाराभिव्यक्ति करते हुए कहा कि पं. मुकुटधर पाण्डेय ने अपनी कविता में प्रकृति और मनुष्य के अंतर्संबंध की व्याख्या की। प्रो. राम नारायण पटेल ने अपने विस्तृत व्याख्यान में छायावाद के भाव एवं कला विन्यास का अत्यंत विद्वतापूर्ण भाव प्रवण विवेचन किया। प्रो. मेदनी प्रसाद नायक ने अपने व्याख्यान में पं. मुकुटधर पाण्डेय को छायावाद के पुरोधा कवि के रूप में वर्णित करते हुए अपनी बात रखी। डॉ. आर. के. पटेल ने अपने वक्तव्य में छायावादी काव्य की उत्कृष्टता एवं उपादेयता पर प्रकाश डाला। डॉ. अमीन केतन प्रधान ने कार्यक्रम का संचालन किया तथा श्री सौरभ सराफ़ ने धन्यवाद-ज्ञापन किया।

*साभार : रायगढ़ टॉप न्यूज़.कॉम*

## दो दिवसीय अंतरराष्ट्रीय वेबिनार

29-30 जुलाई, 2020 को हिमाचल प्रदेश केन्द्रीय विश्वविद्यालय, धर्मशाला के हिंदी विभाग के तत्वावधान में दो दिवसीय अंतरराष्ट्रीय वेबिनार का आयोजन किया गया। वेबिनार के मुख्य अतिथि और केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा के निदेशक, प्रो. नन्दकिशोर पाण्डेय ने अरुणाचल की लोक-संस्कृति की ओर ध्यानाकर्षित करते हुए वहाँ की जनजातियों, नदियों, स्थानीय देवी-देवताओं से जुड़ी कहानियों, लोकगीतों, लोक-कथाओं में विशेषकर सृष्टि उत्पत्ति की कथा, नृत्य आदि के परिचयात्मक और सारगर्भित उदाहरण प्रस्तुत किए। वेबिनार के विशिष्ट अतिथि, विश्व हिंदी सचिवालय, मॉरीशस के महासचिव प्रो. विनोद कुमार मिश्र ने 'पूर्वोत्तर की हिंदी पत्रकारिता' विषय पर विशेषकर असम केन्द्रित हिंदी पत्रकारिता पर अपना वक्तव्य दिया। उन्होंने कहा कि हिंदी सदैव राष्ट्रीय एकता की भाषा रही है। पत्रकारिता, समाज में घटित होने वाली घटनाओं के विषय में जानकारी देती है। वास्तव में पत्रकारिता जनभावना की अनुभूति है। कार्यक्रम का संचालन करते हुए हिंदी विभागाध्यक्ष डॉ. राजकुमार उपाध्याय मणि ने पूर्वोत्तर भारत के आठ राज्यों की भाषा, संस्कृति और सामाजिक स्थिति का परिचय कराया और कहा कि हिमाचल से अरुणाचल की एक संस्कृति और एक जनमानस है। बीज वक्ता ईटानगर के प्रो. ओकेन लेगो ने अरुणाचल की लोकसंस्कृति के धार्मिक पक्ष, लोक पर्व-त्यौहार, वेशभूषा, न्याय-व्यवस्था, सामाजिक स्थिति, सांस्कृतिक वर्जनाओं तथा सांस्कृतिक निषिद्धियों आदि पर प्रकाश डाला। वक्ता तथा विषय प्रवर्तक के रूप में डॉ. ई. विजयलक्ष्मी ने अपने वक्तव्य में मणिपुर का परिचय कराते हुए कहा कि मणिपुर की सम्पर्क भाषा मणिपुरी है, किन्तु इसके अलावा प्राप्त तथ्यों के आधार पर १५वीं शताब्दी के आसपास राजा प्रियम्बर के शासन काल से हिंदी या संस्कृत का प्रयोग होने लगा था। इसी क्रम में उन्होंने आगे कहा कि अंग्रेज़ों के आगमन से भी मणिपुर में हिंदी भाषा को बढ़ावा मिला। इस वेबिनार के प्रथम दिवस में हिंदी विभाग के सहायक प्राध्यापक डॉ. ओमप्रकाश प्रजापति ने आभार-ज्ञापन किया। दो दिवसीय अंतरराष्ट्रीय वेबिनार के दूसरे और अंतिम दिन में पिछले दिन दिए गए वक्ताओं के व्याख्यान का परिचयात्मक विवरण कार्यक्रम के संचालक और हिंदी विभागाध्यक्ष डॉ. राजकुमार उपाध्याय मणि ने प्रस्तुत किया। इसके पश्चात् विशिष्ट वक्ता के रूप में त्रिपुरा विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग की सहायक प्राध्यापिका डॉ. मिलनरानी जमातिया ने कथा साहित्य के माध्यम से त्रिपुरा की सामाजिक और सांस्कृतिक यथार्थ से परिचित करवाया। मुख्य वक्ता के रूप में यू.जी.सी. के सदस्य, प्रो. किरण हज़ारिका ने 'रामकाव्य की परम्परा और पूर्वोत्तर भारत में रामकाव्य की धारा' पर अपना वक्तव्य दिया। इस दो दिवसीय वेबिनार के अध्यक्ष एवं हिंदी के समकालीन समालोचक, दिल्ली विश्वविद्यालय के आचार्य प्रो. चंदन कुमार चौबे ने सभी को एक लोक प्रचलित कहावत द्वारा असम के संत-कवि, आचार्य शंकरदेव से लेकर विभिन्न धार्मिक तथा साहित्यिक मनीषियों के माध्यम से असम और पूर्वोत्तर के धार्मिक, सांस्कृतिक जीवन और हिंदी साहित्य का अपने सुचिंतित, विश्लेषणात्मक और सारगर्भित व्याख्यान से परिचित करवाया। वेबिनार के संरक्षक और हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय के यशस्वी कुलपति प्रो. कुलदीपचंद अग्निहोत्री ने अपने वक्तव्य में कहा कि हिंदी भाषा के साहित्य के साथ पूर्वोत्तर के भाषा के साहित्य को भी पढ़ना-पढ़ाना जाना चाहिए। क्योंकि, ये लोक भाषाएँ हिंदी भाषा को किसी-न-किसी रूप में और मज़बूत करेगी तथा देवनागरी लिपि से पूर्वोत्तर की भाषा, बोली और साहित्य की समृद्धि से राष्ट्रीय एकता बढ़ेगी। धन्यवाद-ज्ञापन हिंदी विभाग के सहायक प्राध्यापक डॉ. चंद्रकांत सिंह ने किया।

*साभार : यू ट्यूब*

## 'हिंदी भाषा के विकास में पत्र-पत्रिकाओं का योगदान' विषयक ऑनलाइन व्याख्यान माला

26 अगस्त, 2020 को उच्च शिक्षा और शोध संस्थान, दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, मद्रास के आंतरिक गुणवत्ता प्रमाणन प्रकोष्ठ एवं पी जी विभाग, हैदराबाद के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित 'हिंदी भाषा के विकास में पत्र- पत्रिकाओं का योगदान' विषयक ऑनलाइन व्याख्यान माला संपन्न हुई। कार्यक्रम की अध्यक्षता आंतरिक गुणवत्ता प्रमाणन प्रकोष्ठ के संयोजक डॉ. सुभाष जी. राणे ने की। प्रो. प्रदीप कुमार शर्मा, कुलसचिव, उच्च शिक्षा और शोध संस्थान, दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, मद्रास मुख्य अतिथि तथा डॉ. शोडषीमोहन दां, कुलपति, उच्च शिक्षा और शोध संस्थान, दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, मद्रास विशेष अतिथि के रूप में उपस्थित थे। कार्यक्रम के मुख्य वक्ता कवि, समीक्षक, उच्च शिक्षा और शोध संस्थान, दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, हैदराबाद के पूर्व आचार्य एवं अध्यक्ष प्रो. ऋषभदेव शर्मा रहे। उन्होंने हिंदी भाषा के विकास में पत्र-पत्रिकाओं के योगदान पर विस्तार से प्रकाश डाला। इस अवसर पर ७० से अधिक विद्यार्थी और शोधार्थी उपस्थित थे। कार्यक्रम का संयोजन पी जी विभाग, हैदराबाद की आचार्या एवं अध्यक्षा डॉ. पी. राधिका ने किया तथा डॉ. गोरखनाथ तिवारी ने धन्यवाद-ज्ञापन किया।

*डॉ. गुर्रमकोंडा नीरजा की रिपोर्ट*

## 'हिंदी का प्रवासी साहित्य एवं उसकी अवधारणा' विषयक वेबिनार

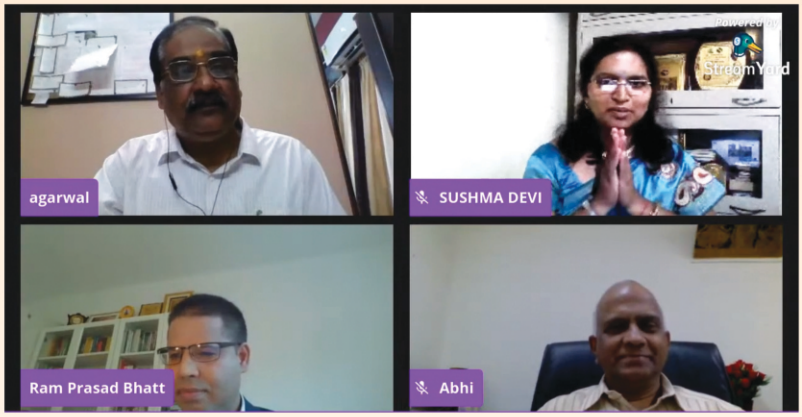


9 जुलाई, 2020 को बद्रुका वाणिज्य एवं कला महाविद्यालय के हिंदी विभाग द्वारा 'हिंदी का प्रवासी साहित्य एवं उसकी अवधारणा' विषय पर एक वेबिनार का आयोजन किया गया। वेबिनार के मुख्य वक्ता श्री राम प्रसाद भट्ट रहे। एसोसिएट प्रोफ़ेसर, उप प्रधानाचार्य, विभाग के प्रमुख डॉ. राजेश अग्रवाल ने वक्ताओं एवं श्रोताओं का स्वागत करते हुए बद्रुका वाणिज्य एवं कला महाविद्यालय के हिंदी विभाग की सक्रियता की प्रशंसा की। संस्था के निदेशक श्री अभीराम कृष्ण ने कार्यक्रम के प्रति अपनी प्रसन्नता जताते हुए श्री राम प्रसाद भट्ट को एक निपुण व्यक्ति बताया तथा वेबिनार के विषय को रोचक बताया। श्री राम प्रसाद भट्ट ने अपना वक्तव्य कालिदास के दोहे से शुरू किया। उन्होंने प्रस्तुतीकरण द्वारा वर्तमान में प्रवासी हिंदी साहित्य तथा उसकी समस्याओं पर अपने विचार रखे तथा शब्द एवं साहित्य का विवरण दिया। श्री राम प्रसाद भट्ट ने बताया कि किस प्रकार कोरोना काल में प्रवासी हिंदी साहित्य से संबंधित अनेक गतिविधियाँ हो रही हैं। साहित्यकार अवसर का लाभ उठाते हुए अपना साहित्य प्रस्तुत कर रहे हैं। वर्चुअल दुनिया को बढ़ावा देने का अवसर मिला है। उन्होंने कहा कि हिंदी भाषा का प्रयोग हर जगह हो रहा है, विदेशों में संग्रहालयों, हवाई अड्डों के साइनेज में आदि। धन्यवाद-ज्ञापन डॉ. राजेश अग्रवाल ने किया।

*साभार : बद्रुका वाणिज्य एवं कला महाविद्यालय*

## 'हिंदी का वैश्विक फलक' विषयक अंतरराष्ट्रीय वेब-संगोष्ठी

16 अगस्त, 2020 को विश्व हिंदी सचिवालय, मॉरीशस के सहयोग से सृजन ऑस्ट्रेलिया अंतरराष्ट्रीय ई-पत्रिका द्वारा 'हिंदी का वैश्विक फलक' विषय पर अंतरराष्ट्रीय वेबिनार का आयोजन किया गया। इस वेबिनार की अध्यक्षता केंद्रीय गृह मंत्रालय के राजभाषा विभाग के पूर्व संयुक्त सचिव डॉ. बिपिन बिहारी ने की। मुख्य वक्ता विश्व हिंदी सचिवालय, मॉरीशस की उपमहासचिव डॉ. माधुरी रामधारी और विशिष्ट वक्ता आर्य सभा मॉरीशस के उपाध्यक्ष श्री सत्यदेव प्रीतम एवं राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार के राजभाषा भारती के उपसंपादक डॉ. धनेश द्विवेदी रहे। वेबिनार में महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय, रोहतक के मानविकी संकाय के डीन एवं पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग के अध्यक्ष प्रो. हरीश कुमार का सान्निध्य रहा। डॉ. माधुरी रामधारी ने कहा कि विश्व भर में हिंदी का प्रवाह निर्बाध रूप से बढ़ रहा है। इसमें तकनीक की बड़ी भूमिका है। आज विश्व के कई देशों में हिंदी दिवस का आयोजन होता है। अमेरिका, कनाडा, तेहरान, कैरो, ओमान, दोहा, पुर्तगाल, भूटान समेत अन्य देशों में हिंदी संगोष्ठी, कविता-पाठ, भाषण के अतिरिक्त फ़िल्मों का प्रदर्शन, साहित्य एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम होते हैं। उन्होंने बताया कि अब तक 11 विश्व हिंदी सम्मेलनों का आयोजन भी प्रमाणित करता है कि हिंदी अंतरराष्ट्रीय स्तर पर स्थापित हो रही है। प्रो. हरीश कुमार ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि हिंदी सांस्कृतिक चेतना को जोड़ने की भाषा है। श्री बिपिन बिहारी ने यह व्यक्त किया कि हिंदी अब बाज़ार की भाषा बन चुकी है। इस मौके पर वक्ताओं ने हिंदी के विस्तार को लेकर चिंतन-मनन किया और बताया कि विदेशी विश्वविद्यालयों में हिंदी विभाग बनाकर वहाँ के छात्रों को हिंदी विदेशी भाषा के तौर पर पढ़ाया जाना सुखद यात्रा की शुरुआत है।

*श्री शैलेंद्र शुक्ल की रिपोर्ट*

## 'हिंदी शिक्षण-उत्तर प्रदेश' विषय पर अंतरराष्ट्रीय वेब-संगोष्ठी

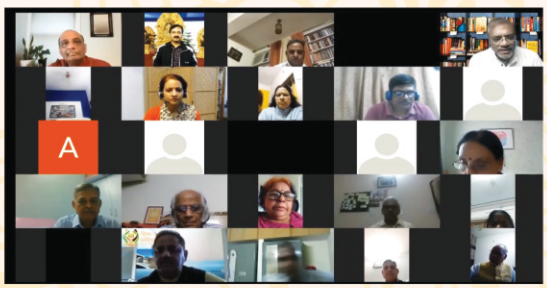

23 अगस्त, 2020 केंद्रीय हिंदी संस्थान और विश्व हिंदी सचिवालय के तत्वावधान में वैश्विक हिंदी परिवार की ओर से भाषा विमर्श श्रृंखला के अंतर्गत 'हिंदी शिक्षण-उत्तर प्रदेश' विषय पर अंतरराष्ट्रीय वेब-संगोष्ठी का आयोजन किया गया। डॉ. जवाहर कर्णावट ने स्वागत-वक्तव्य दिया। कार्यक्रम के मुख्य वक्ता डॉ. सर्वेन्द्र विक्रम सिंह, वरिष्ठ पत्रकार व भाषाविद् श्री राहुल देव तथा श्री अनिल जोशी रहे। डॉ. सर्वेन्द्र विक्रम सिंह ने उन सभी तत्वों का उल्लेख किया, जो विद्यार्थियों की शिक्षा को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करते हैं। उन्होंने बताया कि इन तत्वों को जानकर तथा विश्लेषण कर शिक्षक

विद्यार्थियों की शिक्षा में उत्कृष्टता ला पाएँगे। साथ-साथ उन्होंने विद्यार्थियों के भाषा विकास तथा मस्तिष्क विकास पर भी अपनी बात रखी। वरिष्ठ पत्रकार व भाषाविद् श्री राहुल देव ने विद्यार्थियों की समस्याओं का उल्लेख किया तथा उनके समाधानों को कार्यान्वित करने पर चर्चा की। उन्होंने विद्यार्थियों को पढ़ाते समय शिक्षकों को हो रही समस्याओं का विवरण प्रस्तुत किया। श्री अनिल जोशी ने विद्यार्थियों की भाषा व बोली पर बात की तथा उनको प्रभावित करनेवाले कारणों का उल्लेख किया। उन्होंने संतोष व्यक्त करते हुए कहा कि पिछले वर्षों की तुलना में मल्टीमीडिया द्वारा हिंदी शिक्षण में वृद्धि हुई है। साथ-साथ यह भी कहा कि अगर भाषा समन्वय, भाषा संवाद तथा भाषा सद्भाव की स्थिति बनानी है, तो उत्तर प्रदेश में अन्य भाषाओं को भी एक स्थान मिलना चाहिए। कार्यक्रम के दौरान विभिन्न वक्ताओं और प्रतिभागियों के बीच प्रश्नोत्तर हुए। डॉ. राजेश कुमार ने कार्यक्रम का संचालन किया।

*साभार : वैश्विक हिंदी परिवार का यू ट्यूब*

## 'हिंदी व्याकरणिक परम्परा का इतिहास' विषय पर वेब संगोष्ठी

2 जुलाई, 2020 को वैश्विक हिंदी परिवार तथा विश्व हिंदी सचिवालय, मॉरीशस के संयुक्त तत्वावधान में 'हिंदी व्याकरणिक परम्परा का इतिहास' विषय पर वेब संगोष्ठी का आयोजन किया गया। समारोह के प्रथम सत्र में स्वागत-भाषण सिंगापुर से डॉ. संध्या सिंह ने दिया। ह्युस्टन से डॉ. कविता वाचक्कवी समारोह की मुख्य वक्ता रहीं। उन्होंने व्याकरण के प्रकार पर चर्चा की। हेम्बर्ग विश्वविद्यालय, जर्मनी से श्री राम प्रसाद भट्ट ने विषय प्रवर्तन करते हुए व्याकरण की परिभाषा दी। विश्व हिंदी सचिवालय, मॉरीशस के महासचिव प्रो. विनोद कुमार मिश्र ने विचाराभिव्यक्ति करते हुए बताया कि भाषा को जानने हेतु व्याकरण को जानना आवश्यक है तथा व्याकरण हमें अनुशासित करता है।

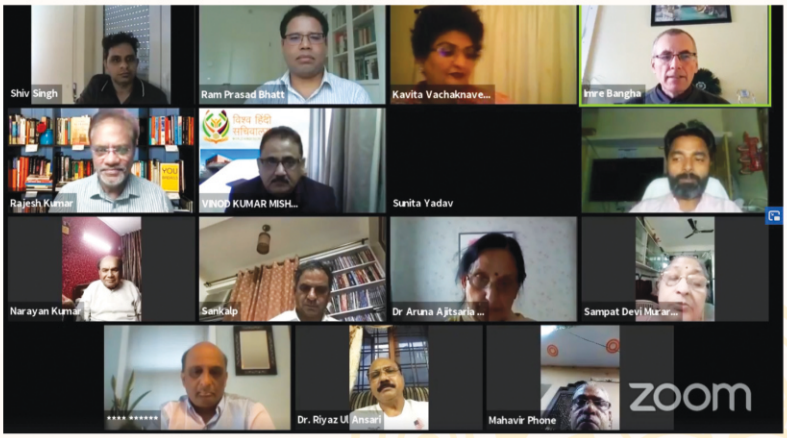


पुर्तगाल के भारतीय अध्ययन केंद्र के कला संकाय के अध्यक्ष प्रो. शिव कुमार सिंह ने व्याकरण पर अपने विचार साझा करते हुए समारोह का संचालन व धन्यवाद-ज्ञापन किया। द्वितीय सत्र में श्री राजेश कुमार ने स्वागत-वक्तव्य दिया। तत्पश्चात् डॉ. इमरे बंघा ने उदाहरण सहित भाषा तथा भाषाई इतिहास पर बात की। उन्होंने साहित्यिक परंपराओं के निर्माण पर भी प्रकाश डाला। समारोह के दौरान हिंदी प्रेमियों के बीच परिचर्चा हुई। श्री पद्मेश गुप्त ने धन्यवाद-ज्ञापन किया।

*साभार : वैश्विक हिंदी परिवार का फ़ेसबुक पृष्ठ*

## न्यूज़ीलैंड में ऑनलाइन हिंदी उत्सव

12 सितंबर, 2020 को न्यूज़ीलैंड से प्रकाशित 'भारत-दर्शन' ऑनलाइन हिंदी पत्रिका ने हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में एक ऑनलाइन हिंदी उत्सव का आयोजन किया। इस अवसर पर पद्मश्री डॉ. भारती बंधु मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता न्यूज़ीलैंड में भारत के महामहिम उच्चायुक्त श्री मुक्तेश परदेशी ने की। विश्व हिंदी सचिवालय, मॉरीशस के महासचिव प्रो. विनोद मिश्र, केन्द्रीय हिंदी शिक्षण मण्डल के उपाध्यक्ष श्री अनिल शर्मा तथा भारत के मानद कौंसल श्री भाव ढिल्लो कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि थे। न्यूज़ीलैंड में भारतीय उच्चायोग के द्वितीय सचिव श्री परमजीत सिंह भी कार्यक्रम

में उपस्थित थे। इस अवसर पर कई वेबसाइट्स व हिंदी सॉफ़्टवेयर का लोकार्पण किया गया। महामहिम उच्चायुक्त श्री मुक्तेश परदेशी ने दो वेबसाइट्स के लोकार्पण किए - कबीरदास की वेबसाइट 'कहत कबीर' व 'वाणी से टंकण', जिसमें बोलकर हिंदी टाइप कर सकते हैं। उन्होंने इसे हिंदी के लिए बहुत उपयोगी बताया। विश्व हिंदी सचिवालय, मॉरीशस के महासचिव प्रो. विनोद मिश्र ने ऑनलाइन उत्सव में भारत-दर्शन पत्रिका का 'प्रशांत अध्याय' लोकार्पित किया। 'प्रशांत के हिंदी साहित्यकार और उनकी रचनाएँ' नामक वेब पृष्ठ में न्यूज़ीलैंड, ऑस्ट्रेलिया और फ़िजी के साहित्यकारों के जीवन परिचय और रचनाएँ संकलित की गई हैं। उन्होंने अपने ऑनलाइन सम्बोधन में कहा "इस तकनीकी युग में हम यह जानते हैं कि ज्ञान पर उसी भाषा का अधिकार होता है, जिसके हाथ में सत्ता होती है। सूचना और प्रौद्योगिकी के युग में हिंदी में बोलकर विराम चिह्नों सहित टाइप होना अद्भुत है।" उन्होंने कहा कि 'भारत-दर्शन' का कार्य सराहनीय और अनुकरणीय है। केन्द्रीय हिंदी शिक्षण मण्डल के उपाध्यक्ष श्री अनिल शर्मा ने 'डिजिटल पुस्तकालय' का लोकार्पण करते हुए शुभकामनाएँ दीं। उन्होंने अपने सम्बोधन में श्री रोहित कुमार हैप्पी को हिंदी का स्तम्भ बताया। उन्होंने भारत-दर्शन के सम्पादक रोहित कुमार हैप्पी को बधाई देते हुए पत्रिका के २४ वर्षीय इतिहास को भी रेखांकित किया और बताया कि हिंदी के प्रति उनका लगाव एक जुनून की हद तक है। उन्होंने कहा कि केन्द्रीय हिंदी संस्थान और वैश्विक हिंदी परिवार की ओर से वे हर संभव अपेक्षित सहायता उपलब्ध कराने का भरसक प्रयत्न करेंगे। भारत के मानद कौंसल भाव ढिल्लो ने सभी अतिथियों और आगंतुकों के प्रति आभार प्रकट किया। उन्होंने भारत-दर्शन के सम्पादक की सराहना करते हुए कहा "हमें इस बात का गर्व है कि हमारे शहर में एक ऐसा हीरा है, जो पूरे विश्व में अपने हिंदी के काम के लिए जाना जाता है।" पद्मश्री डॉ. भारती बंधु ने सम्बोधित करते हुए 'भारत-दर्शन' की सराहना की और शुभकामनाएँ देने के बाद 'कबीर गायन' की प्रस्तुति दी। महामहिम श्री मुक्तेश परदेशी ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में कहा कि अधिकतर लोग जो हिंदी की बात करते हैं, उनका डिजिटल संसार से कोई नाता नहीं है, इसलिए वे हिंदी को आधुनिकता से जोड़ नहीं पाते। हम मानकर चलते हैं कि जो आधुनिक है, वह अंग्रेज़ी है। जो पुराना है, पीछे है वह हमारी भाषाएँ हैं। तकनीक को भाषा कैसे समाहित करती है, ये आज के कार्यक्रम में दिखाई देता है। कार्यक्रम में पाँच सतहें थीं और इससे बढ़िया हिंदी दिवस नहीं हो सकता। उन्होंने आगे कहा "हिंदी भारत को एकता के सूत्र में पिरोती है। हिंदी और भारत की अन्य भाषाओं में कोई मतभेद नहीं है। हिंदी विश्व भाषा के रूप में उभरी है।" डॉ. पुष्पा भरद्वाज-वुड ने भारत-दर्शन की ओर से मुख्य अतिथि, विशिष्ट अतिथियों, कार्यक्रम के अध्यक्ष व ऑनलाइन जुड़े सभी लोगों के प्रति धन्यवाद ज्ञापित किया। सम्पादक श्री रोहित कुमार ने अपने सन्देश में देश-विदेश से जुड़े सभी भारत-दर्शन के मित्रों, पाठकों व सहयोगियों के प्रति आभार व्यक्त किया।

*साभार : श्री रोहित कुमार हैप्पी का*
*फ़ेसबुक पृष्ठ*

## राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त की 134वीं जयंती पर अंतरराष्ट्रीय ई-संगोष्ठी

6 अगस्त, 2020 को सेवाग्राम, वर्धा में राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त की 134 वीं जयंती पर अंतरराष्ट्रीय ई-संगोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसमें प्रख्यात हिंदी विद्वानों ने गुप्त जी की कुछ प्रतिनिधि कविताओं का सरस पठन तथा उनकी आज के संदर्भ में व्याख्या की। वक्ताओं में भारत के प्रख्यात मनोवैज्ञानिक, साहित्यकार प्रो. गिरीश्वर मिश्र, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. रजनीश कुमार शुक्ल, ललित निबंधकार व समीक्षक डॉ. श्रीराम परिहार, हिंदी यूनिवर्स फ़ाउंडेशन, नीदरलैंड की डॉ. पुष्पिता अवस्थी, हिंदी विश्वविद्यालय के जनसंचार विभाग के प्रमुख प्रो. कृपाशंकर चौबे तथा हिंदी एवं तुलनात्मक साहित्य विभाग के प्रो. के. के. सिंह सहभागी हुए। संगोष्ठी में 'नीलांबर परिधान हरित पट पर सुंदर है', साकेत महाकाव्य के चौथे और नवें सर्ग के माध्यम से राम और उर्मिला के उद्दात्त चरित्रों की महत्ता, भारत-भारती के मंगलाचरण से 'मानस भवन में आर्यजन जिनकी उतारें आरती, भगवान भारत वर्ष में गूँजे हमारी भारती' और 'नर हो न निराश करो मन को' तथा स्वस्ति और संकेत से 'आप में समाया मैं' जैसी गुप्त जी की अप्रतिम और सौंदर्यपूर्ण शाश्वत और कालजयी रचनाओं पर सार्थक विमर्श हुआ। देश-विदेश से 100 से अधिक साहित्य रसिकों ने इस ई-संगोष्ठी में भाग लिया। कार्यक्रम की प्रस्तावना डॉ. ओ. पी. गुप्त तथा संचालन डॉ. अनुपमा ने किया।

*श्री बी. एस. मिरगे की रिपोर्ट*

## 'शिक्षा और राष्ट्र-निर्माण' विषय पर वेबिनार

11 जुलाई, 2020 को दिल्ली विश्वविद्यालय के श्री गुरुनानक देव खालसा कॉलिज, भोपाल स्कूल ऑव सोशल साइन्स एवं आनंद इन्सटीट्यूट ऑव सोशल वर्क के संयुक्त तत्वावधान में 'शिक्षा और राष्ट्र-निर्माण' विषय पर वेबिनार का आयोजन किया गया। वेबिनार की अध्यक्षता श्री गुरुनानक देव खालसा कॉलिज, दिल्ली के राजनीति विज्ञान विभाग के प्रो. दीपक शर्मा ने की। समारोह के मुख्य वक्ता विश्व हिंदी सचिवालय, मॉरीशस के

महासचिव प्रो. विनोद कुमार मिश्र रहे, जिन्होंने भारतीय शिक्षा की प्राचीन व्यवस्था पर ध्यान आकृष्ट कराते हुए, शस्त्र और शास्त्र दोनों के ज्ञान को महत्वपूर्ण बताते हुए, यह कहा कि इन सभी के संतुलित समन्वय से ही किसी राष्ट्र का निर्माण हो सकता है। प्रो. मिश्र ने बताया कि हमें अपने विद्यार्थियों के भीतर 'वसुधैव कुटम्बकम्' की अवधारणा को संचारित करने की आवश्यकता है। जब तक यह भावना वर्तमान पीढ़ी के अध्यापक एवं विद्यार्थी में नहीं रहेगी, तब तक किसी राष्ट्र का समुचित निर्माण एवं विकास सम्भव नहीं है। वेबिनार में भारतवर्ष के सभी प्रान्तों से लगभग १५० प्रतिभागियों की प्रतिभागिता रही।

*डॉ. दीपक शर्मा की रिपोर्ट*

## 'तुलसी : तत्त्व चिंतन और श्रवण' विषयक गोष्ठी

27 जुलाई, 2020 को महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा में विश्वविद्यालय के आधिकारिक यूट्यूब चैनल पर गोस्वामी तुलसीदास जयंती पर 'तुलसी : तत्त्व चिंतन और श्रवण' विषयक गोष्ठी का लाइव प्रसारण किया गया। इस गोष्ठी की अध्यक्षता विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. रजनीश कुमार शुक्ल ने की।

गोष्ठी में प्रतिकुलपति प्रो. हनुमान प्रसाद शुक्ल तथा प्रो. कृष्ण कुमार सिंह ने भी अपने विचार व्यक्त किए। स्वागत-वक्तव्य साहित्य विद्यापीठ की अधिष्ठाता प्रो. प्रीति सागर ने दिया। कोलकाता से अपनी बात रखते हुए श्री प्रेम शंकर त्रिपाठी ने गोस्वामी तुलसीदास के अनेक छंदो को उद्धृत किया और उनकी रचनाओं का विस्तार से विवेचन किया। उन्होंने कहा कि तुलसीदास अपने समय के समाज को एक बड़ा आश्वासन देते हैं। तुलसीदास जी ने रामचरितमानस की रचना के माध्यम से भक्ति का सरल सूत्र दिया है तथा भक्ति की सरल परिभाषा भी बतायी है। गोस्वामी तुलसीदास जी ने जनभाषा में लोकचेतना जगाने का काम किया है। उनकी हरी भक्ति मनुष्यता के निर्माण की सीढ़ी है। वैज्ञानिक विकास के इस युग में तुलसीदास का साहित्य सभी के लिए मार्गदर्शक बन सकता है।

अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में कुलपति प्रो. रजनीश कुमार शुक्ल ने कहा कि तुलसीदास मर्यादाओं के कवि हैं। वे रामचरितमानस के माध्यम से अमर्यादित और विचलित समाज में मर्यादाओं को स्थापित करना चाहते हैं। उन्होंने कवि तुलसीदास को भारतीयता के भाष्यकार संज्ञा देते हुए कहा कि उनके साहित्य का पुनर्विवेचन करने की आवश्यकता है।

प्रतिकुलपति प्रो. हनुमान प्रसाद शुक्ल ने तुलसीदास को अनन्य आस्था तथा अखंड विश्वास के कवि बताया। उन्होंने कहा कि कवि तुलसीदास सर्जक रचनाकार, धर्मसंस्थापक, परंपरा के भाष्यकार और मूल्यों के संस्थापक हैं। प्रो. शुक्ल ने बताया कि तुलसीदास सम्यक दृष्टि से संपन्न कवि हैं। हिंदी एवं तुलनात्मक साहित्य विभाग के प्रो. कृष्ण कुमार सिंह ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि 450 वर्षों से तुलसीदास की रचनाओं का जनमानस पर बड़ा प्रभाव रहा है। तत्वज्ञ के रूप में उनका मुकाबला कोई नहीं कर सकता।

गोष्ठी का संचालन मानविकी तथा सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ के अधिष्ठाता एवं जनसंचार विभाग के अध्यक्ष प्रो. कृपा शंकर चौबे ने किया तथा प्रतिकुलपति प्रो. चंद्रकांत रागीट ने धन्यवाद-ज्ञापन किया।

*साभार : हिंदी मीडिया.इन*

## 'वैश्विक संस्कृति, साहित्य एवं अध्यात्म' विषयक अंतरराष्ट्रीय वेबिनार

25 अगस्त, 2020 को हिंदी विभाग, आर्य गर्ल्स कॉलिज, अम्बाला छावनी, ग्लोबल हिंदी शोध संस्थान एवं विश्व हिंदी सचिवालय, मॉरीशस के संयुक्त तत्वावधान में 'वैश्विक संस्कृति, साहित्य एवं अध्यात्म' विषय पर अंतरराष्ट्रीय वेबिनार का आयोजन किया गया।

इस कार्यक्रम की संयोजिका डॉ. संध्या गौतम ने वेबिनार का शुभारंभ करते हुए कहा कि संस्कृति, साहित्य एवं अध्यात्म त्रिवेणी संगम अपने आप में पूर्ण है। उन्होंने वेबिनार विषय का परिचय देते हुए कहा कि इस भारतीय संस्कृति का आधार अध्यात्म है। यदि आध्यात्मिकता को वैज्ञानिकता के साथ जोड़ा जाए, तो हमारा अस्तित्व ऊँचाइयों पर पहुँच सकता है।

महाविद्यालय की प्राचार्या डॉ. अनुपमा आर्य ने मुख्य अतिथि केंद्रीय विश्वविद्यालय, हिमाचल प्रदेश के कुलपति डॉ. कुलदीप चंद अग्निहोत्री, आर्यम् संस्थान, मसूरी के संस्थापक तथा मुख्य वक्ता प्रो. पी. के. आर्य, ग्लोबल हिंदी संस्थान के अंतरराष्ट्रीय चेयरमेन तथा विशेष वक्ता डॉ. कामराज सिन्धु, विश्व हिंदी सचिवालय, मॉरीशस के महासचिव तथा कार्यक्रम के अध्यक्ष प्रो. विनोद कुमार मिश्र, प्रबंधक समिति के प्रधान श्री इन्द्रदेव गुप्त, सचिव, श्री सुरेश त्रेहन, कोषाध्यक्ष, श्री नवीन शर्मा, श्री ओ. पी. सिंगला तथा विभिन्न देशों से सम्मिलित हिंदी के प्रतिष्ठित विद्वान वक्ताओं का स्वागत किया। आगे उन्होंने कहा कि किसी देश को परखने की कसौटी उसकी संस्कृति, साहित्य और अध्यात्म होता है। इतिहास गवाह है कि बहुत-सी संस्कृतियों का अस्तित्व काल के ग्रस्त में समा गया, लेकिन कुछ बात है कि "हस्ती मिटती नहीं हमारी"। साहित्य और अध्यात्म के विषय पर बात करते हुए उन्होंने बताया कि भारत आध्यात्मिकता के उस पलड़े पर खड़ा है, जहाँ आध्यात्मिकता के साथ तर्क विद्यमान है। डॉ. कामराज सिंधु ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि जातिवादी मानसिकता समाज को खोखला कर देती है। धर्म की कोई जाति नहीं होती। उन्होंने कहा कि वैश्विक संस्कृति के सामने हमारी संस्कृति आदर्श संस्कृति है। वैश्विक संस्कृति का आधार ही भारतीय संस्कृति है। उनके अनुसार जाति रूपी विष को समाप्त करने के लिए मानव व इंसानियत को जन्म लेना होगा, जाति विशेष को नहीं। कुलपति डॉ. कुलदीप चंद अग्निहोत्री ने कहा कि संस्कार संस्कृति का मूल है। संस्कृति हमारी जीवनशैली, आचरण, व्यवहार आदि को मिलाकर बनती है। उन्होंने कहा कि स्वसुख और स्वस्वार्थ को छोड़कर परसुख और परोपकार की भावना ही मनुष्य को संस्कारवान बनाती है। प्रो. विनोद कुमार मिश्र ने अपने वक्तव्य में कहा कि संस्कारों को आज की शिक्षा का अभिन्न अंग बनाने की अति आवश्यकता है, जिससे कि विद्यार्थियों में घर के साथ-साथ विद्यालय में भी संस्कारों से ओत-प्रोत किया

जा सके। भारत के सभी राज्यों तथा मॉरीशस, जर्मनी, नॉर्वे, नेपाल, श्रीलंका, जापान, ऑस्ट्रेलिया, बेल्जियम इत्यादि देशों के प्रतिभागियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।

*साभार : न्यूज़ उभरता हरियाणा*

## वार्षिक अधिवेशन एवं ई-विश्व कवि सम्मेलन

25 जुलाई, 2020 को अखिल विश्व हिंदी समिति ने ज़ूम कॉन्फ्रेंस द्वारा टोरोंटो का 11वाँ वार्षिक अधिवेशन व 'ई- विश्व कवि सम्मेलन' का भव्यता से आयोजन किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता हिंदी एवं संस्कृति शोध संस्थान के महासचिव व अंतरराष्ट्रीय हिंदी समिति, भारत के राष्ट्र सचिव, आगरा से डॉ. श्री भगवान शर्मा ने की तथा कनाडा से हिंदी प्रचारिणी सभा के अध्यक्ष व 'हिंदी चेतना' के प्रमुख संपादक श्री श्याम त्रिपाठी कार्यक्रम के उपाध्यक्ष रहे। टोरोंटो, कनाडा की भारतीय कौंसुलाधीश सम्माननीया अपूर्वा श्रीवास्तव मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थीं। प्रमुख अतिथि थे राजभाषा विभाग, संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार के निदेशक श्री वेद प्रकाश गौड़। नागरी लिपि परिषद्, नई दिल्ली के महासचिव डॉ. हरिसिंह पाल तथा अखिल विश्व हिंदी समिति, न्यूयॉर्क, अमेरिका के कार्यकारी उपाध्यक्ष डॉ. प्रदीप टंडन विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित थे। अंतरराष्ट्रीय हिंदी समिति, भारत के अंतरराष्ट्रीय महासचिव डॉ. प्रवीण गुप्त व उपाध्यक्ष श्री राजेश गर्ग कार्यक्रम के विशेष अतिथि थे।

कार्यक्रम का शुभारम्भ श्री गोपाल बघेल 'मधु' द्वारा मंत्रों के उच्चारण से हुआ। भारतीय कौंसुलाधीश अपूर्वा श्रीवास्तव ने अपने संबोधन में भारतीय विदेश मंत्री स्व. सुषमा स्वराज जी के साथ अपने व्यक्तिगत सचिव के कार्यकाल के विषय की स्मृति साझा कीं व साहित्य के प्रचार-प्रसार के लिए अपनी विशेष प्रतिबद्धता प्रकट की। उन्होंने सभी साहित्यकारों के अनवरत प्रयासों को सराहा व हार्दिक धन्यवाद दिया व भारतीय कौंसुलावास की ओर से हिंदी के विकास व उन्नयन के लिए हर संभव सहायता देने का आश्वासन दिया।

इस अवसर पर उपस्थित कवियों ने अपनी रचनाएँ सुनाकर श्रोताओं का हृदय तरंगित किया। मुख्य अतिथियों ने साहित्यकारों को हिंदी साहित्य की सेवा करने के लिए सराहा, प्रोत्साहित किया और सहयोग प्रदान करने के लिए आश्वस्त किया। श्री वेद प्रकाश गौड़ ने भारत सरकार के संस्कृति मंत्रालय के राजभाषा विभाग से हिंदी साहित्य के संवर्धन व प्रचार-प्रसार के लिए हर सम्भव सहयोग देने का आशीर्वचन दिया। उपस्थित साहित्यकारों में भारत, कनाडा, अमेरिका, लंदन, मॉरीशस इत्यादि देशों से सहभागिता हुई। सम्मेलन का आयोजन व संचालन अखिल विश्व हिंदी समिति, आध्यात्मिक प्रबंध पीठ व मधु प्रकाशन, टोरोंटो के अध्यक्ष व हिंदी साहित्य सभा के महासचिव गोपाल बघेल 'मधु' ने किया। प्रमुख सहायक संचालक थे फ़्रीडम योगा व संस्कृत योग सभा, कनाडा के अध्यक्ष आचार्य संदीप त्यागी।

*साभार : इयत्ता का ब्लॉग*

## 'विश्व हिंदी शिक्षण : स्थिति और संभावनाएँ' विषयक वेब संगोष्ठी

9 अगस्त, 2020 को विश्व हिंदी सचिवालय, मॉरीशस और वैश्विक हिंदी परिवार के संयुक्त तत्वावधान में 'विश्व हिंदी शिक्षण : स्थिति और संभावनाएँ' विषयक वेब संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इसमें मुख्य वक्ता पूर्व राजदूत श्री अखिलेश मिश्र और विश्व हिंदी सचिवालय, मॉरीशस के महासचिव प्रो. विनोद कुमार मिश्र थे। साथ ही इस कार्यक्रम में मॉरीशस, ट्रिनिडाड एंड टोबेगो और नेपाल के लिए नामित हिंदी और संस्कृति अधिकारियों का स्वागत किया गया। समारोह के दौरान मॉरीशस में भारतीय उच्चायोग की पूर्व द्वितीय सचिव डॉ. नूतन पाण्डेय ने मॉरीशस का वर्णन करते हुए भारत और मॉरीशस के संबंधों पर प्रकाश डाला। उन्होंने मॉरीशस में हिंदी के प्रचार में हो रहे कार्यों तथा हिंदी भाषा की स्थिति पर बात की।

केंद्रीय हिंदी निदेशालय के साहित्य निदेशक डॉ. दीपक पाण्डेय ने हिंदी में अपने द्वारा किए गए कार्यों का उल्लेख किया।

श्रीमती सुनीता पाहूजा, द्वितीय सचिव ( हिंदी एवं संस्कृति), भारतीय उच्चायोग मॉरीशस ने ट्रिनिडाड एंड टोबेगो में हिंदी शिक्षण तथा वहाँ पर हुए कार्यों को साझा किया तथा सुझाव दिया कि हिंदी शिक्षण में मल्टीमीडिया का प्रयोग अधिक फलदायक सिद्ध होगा।

श्री शिव कुमार ने बताया कि वे विभिन्न हिंदी सेवी संस्थाओं के मूर्धन्य लोगों की कृतियों का हिंदी व अंग्रेज़ी में अनुवाद कार्य करने की योजना बना रहे हैं। इससे औरों को हिंदी से अंग्रेज़ी अनुवाद पर कार्य करने हेतु प्रोत्साहन मिलेगा। श्री सत्येंद्र दहिया ने नेपाल में कार्य करते हुए वहाँ अंतरराष्ट्रीय हिंदी सम्मेलन का आयोजन तथा हिंदी की कालजयी पुस्तकों का नेपाली भाषा में अनुवाद कार्य करने की अपनी परियोजना साझा की।

विश्व हिंदी सचिवालय, मॉरीशस के महासचिव प्रो. विनोद कुमार मिश्र ने हिंदी को संयुक्त राष्ट्र की भाषा बनाने पर किए जा रहे कार्यों पर अपनी बात रखते हुए, इसमें विश्व हिंदी सचिवालय, मॉरीशस का वैश्विक स्तर पर सहयोग का आश्वासन दिया।

श्री अखिलेश मिश्र ने व्यक्त किया कि विभिन्न देशों की अलग-अलग शिक्षण प्रणाली होती हैं। उन्होंने बताया कि हर देश में कुछ-न-कुछ भारतीय संस्कृति से मिलता है और कुछ भिन्नताएँ भी उपस्थित हैं। उन्होंने सुझाव दिया कि उन समानताओं से संबंधित रूप से प्रयोग समारोह आदि में किए जाने चाहिए तथा जो भी कार्यक्रम विदेश में किया जा रहा हो, उसकी रूपरेखा इस तरह से नियत करना चाहिए कि वे विदेशी स्थानीय मित्रों के लिए सर्वाधिक अनुकूल व सुविधाजनक विषय बनें। साथ-साथ उन्होंने यह भी बताया कि भाषा का हमारे जीवन में महत्व संवाद से कहीं बड़ा है व भाषा ही संस्कृति, दर्शन, मूल्य भाषा संवाहिनी प्राण होती है। डॉ. जवाहर कर्णावट ने समारोह का संचालन किया तथा श्री अनिल जोशी ने धन्यवाद-ज्ञापन किया।

*साभार : वैश्विक हिंदी परिवार का यू ट्यूब*

## वेब कवि गोष्ठी

14 सितंबर, 2020 को भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद्, हैदराबाद, क्षेत्रीय पासपोर्ट कार्यालय, हैदराबाद तथा 'समन्वय' द्वारा हिंदी दिवस 2020 के उपलक्ष्य में एक कवि गोष्ठी का आयोजन किया गया। सूरीनाम से सुश्री सुनैना रामगुलाम ने हिंदी भाषा को हृदय से

बोली जानेवाली भाषा का दर्जा दिया। मॉरीशस के युवा कवि श्री वशिष्ठ कुमार झमन ने हिंदी के प्रति अपने जुड़ाव की भावना को व्यक्त किया तथा हिंदी के प्रति आकर्षण पर बात की। साथ ही मॉरीशसीय साहित्य को अपना योगदान देने के प्रयत्न को उजागर किया।

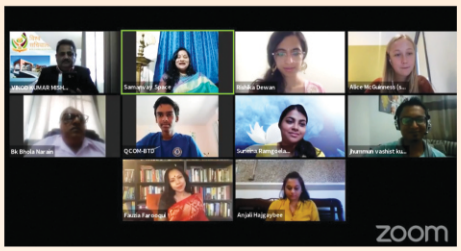


सुश्री ऐलिस मैक गिनस ने अपने विचार व्यक्त करते हुए हिंदी के प्रति अपनी रुझान को प्रकट किया। उन्होंने कहा कि हिंदी से उनको भारत तथा भारतीय संस्कृति के बारे में सीखने को मिलेगा।

सूरीनाम से श्री आदेश ज्ञान पांचू ने कहा कि बचपन में भजन-गायन से हिंदी के प्रति उनका आकर्षण पैदा हुआ।

अमेरिका की सुश्री ऋषिका दीवान ने बताया कि सभी के साथ हिंदी बोलने हेतु, भाषा सीखने हेतु जिज्ञासा उत्पन्न हुई। इसीलिए हिंदी पढ़ने व लिखने की इच्छा जगी। मॉरीशस की श्रीमती श्रद्धांजलि हजगैबी-बिहारी ने मॉरीशस में विश्व हिंदी सचिवालय द्वारा हिंदी के प्रचार-प्रसार में हो रहे कार्यों का उल्लेख किया।

सूरीनाम के श्री भोला नारायण ने सूरीनाम में बोली जानेवाली भाषा का उल्लेख किया। उन्होंने हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार में सूरीनाम हिंदी परिषद् के योगदान को व्यक्त किया तथा हिंदी शिक्षण में नवीनता लाने की बात कही। विश्व हिंदी सचिवालय, मॉरीशस के महासचिव प्रो. विनोद कुमार मिश्र ने सूरीनाम में हिंदी भाषा के पाठ्यक्रम में विश्व हिंदी सचिवालय के सहयोग का आश्वासन दिया। अमेरिका की डॉ. फ़ॉज़िया फ़ारूकी ने अमेरिका में हिंदी के उत्थान को दर्शाया तथा कहा कि लोग व्यावसायिक दृष्टि से वहाँ हिंदी का चुनाव कर रहे हैं।

समारोह के दौरान सभी ने अपनी-अपनी कविताओं का पाठ किया। श्रीमती नीरजा आसे ने कार्यक्रम का संचालन किया।

*साभार : समन्वय स्पेस*

## ज़ूम कवि सम्मेलन

13 अगस्त, 2020 को कथा यू.के. और नेहरू सेन्टर (भारतीय उच्चायोग, लंदन) के साझा प्रयास से नेहरू सेन्टर लंदन के प्लेटफ़ॉर्म पर एक ज़ूम कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया। कवि सम्मेलन की शुरूआत में कथा यू.के. के महासचिव श्री तेजेन्द्र शर्मा ने अपनी संस्था के अध्यक्ष श्री कैलाश बुधवार को श्रद्धांजलि अर्पित की और उनकी सेवाओं को याद किया तथा प्रसिद्ध शायर राहत इंदौरी को भी याद किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि सांसद श्री विरेन्द्र शर्मा रहे। नेहरू सेन्टर के निदेशक और प्रसिद्ध लेखक श्री अमीश त्रिपाठी ने प्रसन्नता व्यक्त की कि ज़ूम के माध्यम से यह कवि सम्मेलन पूरे विश्व में देखा जा रहा है।

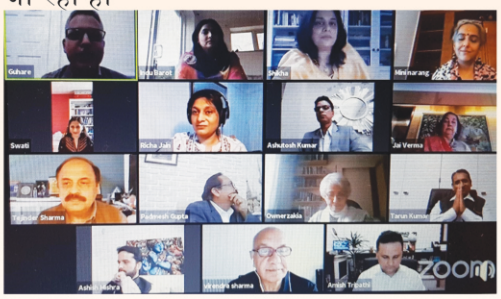


ब्रिटेन की लेबर पार्टी के सांसद श्री विरेन्द्र शर्मा का कहना था कि कथा यू.के., नेहरू सेन्टर और भारतीय उच्चायोग इस बात के लिये बधाई के पात्र हैं कि भारत के 74वें स्वतन्त्रता दिवस के उपलक्ष्य में एक कवि सम्मेलन का आयोजन किया है। यह ब्रिटेन के भारतीय समाज को एक सूत्र में पिरोने के लिये महत्वपूर्ण कदम है। लंदन से श्री तेजेन्द्र शर्मा और श्रीमती ज़किया ज़ुबैरी, ऑक्सफ़र्ड से डॉ. पद्मेश गुप्त, वेल्स से श्री निखिल कौशिक, नॉटिंघम से श्रीमती जय वर्मा, श्रीमती शिखा वार्ष्णेय, श्रीमती इंदु बरोत, श्रीमती ऋचा जैन जिन्दल, श्री आशुतोष कुमार, श्रीमती तिथि दानी, श्रीमती स्वाति पटेल, श्रीमती मिनी नारंग एवं श्री तरुण कुमार ने कवि सम्मेलन में भाग लिया। कवि सम्मेलन में ब्रिटेन के वरिष्ठ साहित्यकार श्रीमती दिव्या माथुर और आलोचक एवं अध्यापक श्रीमती अरुणा अजितसरिया भी उपस्थित रहीं।

कार्यक्रम का संचालन युवा कवि श्री आशिष मिश्र ने किया तथा धन्यवाद-ज्ञापन श्री तेजेन्द्र शर्मा ने किया।

*साभार : श्री तेजेंद्र शर्मा का फ़ेसबुक पृष्ठ*

## श्री वीरेन डंगवाल की 73वीं जयंती पर वेबिनार

5 अगस्त, 2020 को प्रतिष्ठित पत्रिका 'आधारशिला' द्वारा श्री वीरेन डंगवाल की 73वीं जयंती के उपलक्ष्य में वेबिनार का आयोजन किया गया। यह समारोह उनके व्यक्तित्व व कृतित्व को याद करने की कोशिश रही। वरिष्ठ साहित्यकार हेतु भारद्वाज ने श्री वीरेन डंगवाल को याद करते हुए कहा कि वे नए अंदाज़ के कवि थे। उन्होंने हिंदी कविता का नया मुहावरा गढ़ा। उन्होंने बताया कि श्री वीरेन ने जन सामान्य के जीवन की साधारण स्थितियों को असाधारण बनाने के लिए अपनी भाषा गढ़ी। कविता के साथ ही हिंदी पत्रकारिता में उन्होंने महत्वपूर्ण योगदान दिया, जिसे हमेशा याद किया जाएगा। वेबिनार में श्री वीरेन डंगवाल की कविताओं पर चर्चा की गई।

वरिष्ठ साहित्यकार प्रो. लक्ष्मण सिंह बटरोही ने कहा कि श्री वीरेन के मन-मस्तिष्क में एक कवि से अधिक आत्मीय दोस्त की छवि है। उन्होंने जैसे समाज को देखा उसी रूप में अपनी कविताओं में उसे व्यक्त किया। वे ज़िंदगी व कविता के बीच फ़ासला नहीं रखते थे। कार्यक्रम का संचालन करते हुए 'आधारशिला' के प्रधान संपादक व लेखक-पत्रकार दिवाकर भट्ट ने कहा कि श्री वीरेन डंगवाल ने हिंदी कविता की श्रीवृद्धि में अप्रतिम योगदान दिया। उनकी कविताएँ अलग मिज़ाज की आमजन की विशिष्ट अभिव्यक्ति हैं। हिंदी पत्रकारिता में उनका महत्वपूर्ण योगदान रहा। वरिष्ठ पत्रकार दिनेश जुयाल ने कहा कि श्री वीरेन डंगवाल प्रतिबद्ध कवि थे लेकिन, पत्रकारिता के रूप में उनके सामने पूरी दुनिया थी। उन्होंने हिंदी पत्रकारिता को समग्रता से देखा और उसी के रूप में उसका प्रस्तुतीकरण किया। वरिष्ठ पत्रकार प्रभात सिंह ने कहा कि हमारी पीढ़ी के पत्रकारों ने श्री वीरेन डंगवाल के साथ रहकर ही पत्रकारिता सीखी। वरिष्ठ साहित्यकार प्रो. वाचस्पति ने कहा कि श्री वीरेन डंगवाल हिंदी के वह कवि हैं, जिन्होंने अपनी कविताओं में नगण्य चीज़ों को महत्व दिया और उसे कविता का विषय बनाकर अत्यंत महत्वपूर्ण बना दिया। वे आमजन के विशिष्ट कवि हैं। श्री वीरेन डंगवाल की कविताओं के साथ उनका गद्य भी ध्यान खींचता है। इस अवसर पर उनकी कविताओं का पाठ भी किया गया।

*साभार : शब्द रथ.कॉम*

## 'प्राथमिक स्तर पर हिंदी शिक्षण' विषय पर साहित्य-संवाद गोष्ठी

26 अगस्त, 2020 को इंदिरा गांधी भारतीय सांस्कृतिक केंद्र, फ़ेनिक्स, मॉरीशस में साहित्य-संवाद गोष्ठी आयोजित की गई। समारोह की वक्ता सुश्री आरती हेमराज़ रहीं। साथ ही उनकी कक्षा के छात्रों ने प्रस्तुति में उनका साथ दिया। प्राथमिक शिक्षा में हिंदी के इतिहास से लेकर छात्रों द्वारा वर्ण उच्चारण, लिपि ज्ञान, परिच्छेद लेखन पर चर्चा हुई तथा कहानी, कविता व निबंध का सराहनीय प्रस्तुतीकरण किया गया। इस अवसर पर श्रोताओं द्वारा अनेक सकारात्मक टिप्पणियाँ एवं उनके अनुभव भी साझा किए गए। कार्यक्रम में विश्व हिंदी सचिवालय की उपमहासचिव, डॉ. माधुरी रामधारी भी मंचस्थ थीं। कार्यक्रम का संचालन श्रीमती अंजू घरभरन ने किया।

*श्रीमती अंजू घरभरन की रिपोर्ट*

## महात्मा गांधी के १५१वें जन्मोत्सव के उपलक्ष्य में अंतरराष्ट्रीय वेबिनार

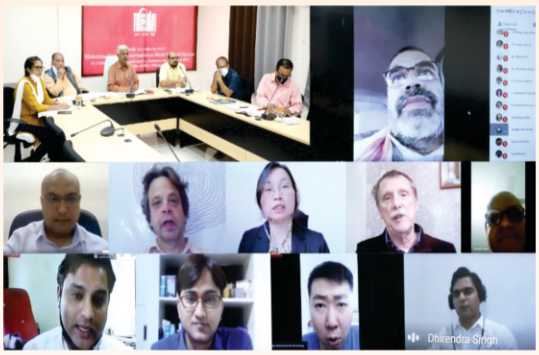

29 सितंबर, 2020 को महात्मा गांधी के 151वें जन्मोत्सव के उपलक्ष्य में महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के सूचना एवं भाषा अभियांत्रिकी केंद्र द्वारा अंतरराष्ट्रीय वेबिनार का आयोजन किया गया। यह अंतरराष्ट्रीय वेबिनार 'महात्मा गांधी के आधुनिक भारत की कल्पना : भारतीय बहुभाषा एवं भारतीय भाषा अभियांत्रिकी' विषय पर आधारित रहा। इसमें संयुक्त राज्य अमेरिका, दक्षिण कोरिया, चीन, जापान, मॉरीशस एवं भारतीय विश्वविद्यालयों से विषय विशेषज्ञ जुड़े थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता माननीय कुलपति प्रो. रजनीश कुमार शुक्ल ने की और सह-अध्यक्षता सह-कुलपति द्वारा की गई। विशेषज्ञों ने मुख्यतः भारतीय बहुभाषा परिदृश्य में भाषा अभियांत्रिकी के महत्वपूर्ण योगदान पर अपने विचार रखे। इसके अतिरिक्त नई शिक्षा नीति के अंतर्गत मातृभाषा शिक्षण एवं हिंदी भाषा शिक्षण पर बनारस हिंदू विश्वविद्यालय और भारतीय भाषा संस्थान, मैसूर के विशेषज्ञों ने विस्तार से चर्चा की और मातृभाषा एवं हिंदी भाषा के शिक्षण पर विचार व्यक्त किए। भाषा अभियांत्रिकी पर संयुक्त राज्य अमेरिका, दक्षिण कोरिया, जापान, चीन एवं मॉरीशस के विशेषज्ञों ने आधुनिक भाषा अभियांत्रिकी की जानकारी दी, जिसमें मुख्यतः मशीनी अनुवाद, अभियांत्रिकी द्वारा हिंदी का पठन-पाठन एवं भारतीय भाषाओं के पठन-पाठन पर अपने बहुमूल्य विचार रखे। उद्घाटन वक्तव्य देते हुए कुलपति प्रो. रजनीश कुमार शुक्ल ने महात्मा गांधी एवं प्रौद्योगिकी के बारे में जानकारी दी और भारत में भाषा अभियांत्रिकी की आवश्यकताओं पर बल दिया। स्वागत वक्तव्य में केंद्र के निदेशक प्रो. विजय कुमार कौल ने सभी अंतरराष्ट्रीय विशेषज्ञों का स्वागत कर सूचना एवं भाषा अभियांत्रिकी केंद्र के बारे में जानकारी दी।

*श्री बी.एस. मीरगे की रिपोर्ट*

## 'रामचरितमानस से नि:सृत लोकगीत' विषय पर साहित्य संवाद गोष्ठी

29 सितम्बर, 2020 को इंदिरा गांधी भारतीय सांस्कृतिक केंद्र, फ़ेनिक्स, मॉरीशस में 'रामचरितमानस से नि:सृत लोकगीत' विषय पर साहित्य संवाद का आयोजन किया गया। इस अवसर पर श्रीमती नर्वदा खेदना वक्ता के रूप में उपस्थित रहीं। उन्होंने अपने वक्तव्य में पूर्वजों के आगमन से बैठकाओं की स्थापना, समाज में हो रही गतिविधियाँ, जन्म से मृत्यु तक के सभी संस्कारों तथा रामायण अथवा गोस्वामी तुलसीदास के आराध्य श्रीराम की आस्था पर आधारित गीतों पर बात की। इस अवसर पर गीतगवाई की विभिन्न टोलियों ने इन भावों एवं संस्कारों को परंपरागत गीतों द्वारा प्रस्तुत किया। कार्यक्रम में इंदिरा गांधी भारतीय सांस्कृतिक केंद्र की निदेशिका आचार्य प्रतिष्ठा, विश्व हिंदी सचिवालय के महासचिव प्रो. विनोद मिश्र तथा उपमहासचिव डॉ. माधुरी रामधारी उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन श्रीमती अंजू घरभरन ने किया।

*श्रीमती अंजू घरभरन की रिपोर्ट*

# लोकार्पण

## त्रैमासिक पत्रिका 'नया भाषा भारती संवाद' का लोकार्पण

9 जुलाई, 2020 को बिहार हिंदी साहित्य सम्मेलन में साहित्यिक समाचारों की त्रैमासिक पत्रिका 'नया भाषा भारती संवाद' के 20 वें वर्ष के चौथे अंक का लोकार्पण किया गया। पत्रिका के संपादक श्री बाँके बिहारी साव ने अतिथियों का स्वागत करते हुए पत्रिका के पाठकों के प्रति अपना हार्दिक आभार प्रकट किया। उन्होंने कहा कि जिस प्रकार देश भर के हिंदी-प्रेमी पाठकों ने विशेषकर दक्षिण-भारत के हिंदी-प्रेमियों ने इस पत्रिका का हृदय से स्वागत किया है और अपनी रचनात्मक प्रतिक्रिया दी है, उससे पत्रिका परिवार को बड़ा ही प्रोत्साहन और उत्साह प्राप्त हुआ है। यह पत्रिका विदेशों में भी जाने लगी है और प्रयास रहा है कि देश भर में जहाँ भी हिंदी के लिए कार्य हो रहे हैं, उन्हें पत्रिका में स्थान मिले। कार्यक्रम के अध्यक्ष डॉ. अनिल सुलभ ने पत्रिका के दीर्घायु होने पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए, राष्ट्र-भाषा हिंदी के प्रति पूरे देश में जागृति फैलाने में इसकी भूमिका की सराहना की। उन्होंने कहा कि देश में एक राष्ट्र-ध्वज और एक राष्ट्र-चिह्न की तरह एक 'राष्ट्र-भाषा' होनी चाहिए। प्रांतों की भाषाएँ अलग-अलग हों, तो कोई बात नहीं पर देश की भाषा एक ही होनी चाहिए। कार्यक्रम के उपाध्यक्ष डॉ. शंकर प्रसाद, श्री कुमार अनुपम, डॉ. मनोज कुमार, डॉ. विनय कुमार विष्णुपुरी तथा श्री कृष्ण रंजन सिंह ने भी अपने विचार व्यक्त किए। इस अवसर पर श्री सच्चिदानंद शर्मा, कुमारी मेनका, श्री अमरेन्द्र झा, श्री निशिकांत मिश्र आदि हिंदी-प्रेमी तथा अन्य गण्यमान्य अतिथि उपस्थित थे।

*डॉ. अनिल सुलभ की रिपोर्ट*

# श्रद्धांजलि

## डॉ. मृदुला झा

9 अगस्त, 2020 को वरिष्ठ साहित्यकार डॉ. मृदुला झा का 73 वर्ष की आयु में निधन हो गया। आप का जन्म 5 दिसंबर, 1946 को वनद्वार, बेगूसराय, भारत में हुआ था। आप बैजनाथ बालिका इंटर स्कूल की पूर्व प्राचार्या तथा मैथिली परिषद् की पूर्व अध्यक्षा भी थी। सेवानिवृत्ति के बाद आपने साहित्य सृजन में अपना पूरा योगदान दिया। वर्ष 2003 से अब तक आपकी कविता, उपन्यास, कहानी की दो दर्जन पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। आप देश ही नहीं विदेशों के साहित्य मंच पर सम्मानित और पुरस्कृत हुई हैं। जर्मनी, फ़्रांस, इंडोनेशिया में आपको हिंदी साहित्य की सेवा के लिए सम्मानित किया गया। आपको विद्यावाचस्पति, साहित्य सागर, शब्द रत्न की मानद उपाधि भी प्राप्त हुई है।

*साभार : आदित्य सिटी न्यूज़ का वेबसाइट*

**विश्व हिंदी सचिवालय तथा समस्त हिंदी जगत् की ओर से पुण्यात्मा को भावभीनी श्रद्धांजलि।**

# संपादकीय

## हिंदी बोलने का व्रत

यह सर्वविदित है कि भाषा के दो रूप हैं – मौखिक और लिखित। भाषा के लिखित रूप के महत्व को यद्यपि नकारा नहीं जा सकता, तथापि भाषा के विश्वव्यापी प्रसार में उसके मौखिक रूप की भूमिका मुख्य है। बोलचाल में व्यापक प्रयोग न करने से भाषा को धीरे-धीरे बिसरने और फिर उसके विलुप्त होने की संभावना रहती है। आज विश्व में हिंदी बोलने वालों के आँकड़े सामने प्रस्तुत करते हुए यह गर्व से कहा जाता है कि हिंदी विश्व की सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषाओं में से एक है। किन्तु, परिवर्तन की आंधी तीव्र गति से चल रही है। हिंदी भाषी जब घर, परिवार, समाज, स्वदेश और परदेश में अर्थात् हर स्थान पर हिंदी बोलने का व्रत लेंगे और इस व्रत का पालन दृढ़तापूर्वक करेंगे, तब हिंदी के प्रयोगकर्ताओं के अनुपात में गुणात्मक वृद्धि होगी और संयुक्त राष्ट्र संघ की आधिकारिक भाषाओं में हिंदी को यथोचित स्थान प्राप्त होगा।

हिंदी भाषा की समृद्धि की यात्रा घर से आरम्भ होती है। माता-पिता घर पर बच्चों के साथ हिंदी में बोलेंगे, तो हिंदी बच्चों की मातृभाषा या प्रथम भाषा बनेगी। हिंदी भाषा-भाषी को यह लक्ष्य निर्धारित करना है कि वे अपनी संतानों को सर्वप्रथम हिंदी बोलना सिखाएँगे। तदुपरान्त देश और काल की आवश्यकता के अनुसार अन्य भाषाओं का ज्ञान कराएँगे। इस उद्देश्य की पूर्ति में सम्भवत: अनेक बाधाएँ प्रस्तुत होंगी। वर्तमान काल की सामान्य प्रवृत्ति यह है कि अभिभावक अपने बच्चों को सर्वप्रथम उस भाषा से परिचित कराते हैं, जो उनकी दृष्टि में बच्चों की औपचारिक शिक्षा और आजीविका-प्राप्ति में अधिक सहायक होती है। इतिहास साक्षी है कि पिछले कुछ दशकों से कई ऐसे प्रसिद्ध विद्वान उभरे हैं, जिनकी मातृभाषा हिंदी है और जो अपने देश के शीर्ष पदों पर विराजमान रहे हैं। अपनी मातृभाषा के अतिरिक्त वे विद्यालयों में सीखी गयी द्वितीय या विदेशी भाषाओं का प्रयोग निपुणता से करते हैं। उच्च पद प्राप्त करने और अन्य भाषाओं पर अधिकार करने में उनकी प्रथम भाषा हिंदी कभी बाधक नहीं बनी। दूसरी ओर यह भी देखा गया है कि कुछ बच्चे अपने घर में प्रथम भाषा के रूप में अंग्रेज़ी का प्रयोग करते हैं, फिर भी केम्ब्रिज के स्कूल सर्टिफ़िकेट की परीक्षा में अंग्रेज़ी में क्रेडिट नहीं ला पाते हैं। यह मात्र एक भ्रम है कि घर पर अंग्रेज़ी या अन्य विदेशी भाषाएँ बोलने से बच्चे शिक्षा के क्षेत्र में बेहतर कर पाएँगे। इस भ्रम से छुटकारा पाकर माता-पिता यदि घर के परिवेश में हिंदी बोलने का व्रत लेंगे, तो बच्चों को मातृभाषा हिंदी के साथ संस्कृति से भी जुड़ने का सौभाग्य प्राप्त होगा।

हिंदी के पठन-पाठन की व्यवस्था विश्व के कई विद्यालयों में की गयी है। घर-परिवार में हिंदी में व्यवहार करने वाले बच्चे हिंदी की औपचारिक शिक्षा के अंतर्गत शब्द-प्रयोग और वाक्य-रचना करते हुए हिंदी में सहजतापूर्वक मौखिक अभिव्यक्ति करते हैं। जिन छात्रों की मातृभाषा हिंदी नहीं है, वे अक्सर हिंदी बोलने में संघर्ष करते हुए दृष्टिगत होते हैं। माध्यमिक या विश्वविद्यालयी स्तर पर अनेक विद्यार्थी हिंदी को द्वितीय भाषा के रूप में सीखकर परीक्षाओं में अच्छे अंक प्राप्त कर लेते हैं। परन्तु जब नौकरी हेतु साक्षात्कार के लिए वे प्रस्तुत होते हैं तब हिंदी में मौखिक अभिव्यक्ति के कौशल का प्रमाण देने में चूक जाते हैं, अर्थात् हिंदी के पठन-पाठन के दौरान हिंदी में लेखन का संतोषजनक अभ्यास तो किया जा रहा है, पर मौखिक अभिव्यक्ति के अभ्यास में कमी की अनुभूति होती है। हिंदी में बोलचाल की क्षमता का विकास करने के लिए पाठ्यपुस्तकों में रोचक और उपयोगी भाषिक गतिविधियों का समावेश किया जा रहा है, परम्परागत विधियों के साथ नवाचार को भी प्राथमिकता दी जा रही है और मौखिक अभिव्यक्ति का परीक्षण भी हो रहा है। इन सराहनीय प्रयासों के अतिरिक्त यह आवश्यक है कि हिंदी के अध्यापक अपने विद्यार्थियों से सदैव हिंदी में बोलने का पूर्ण प्रयत्न करें। हिंदी शिक्षक एक-दूसरे से हिंदी में वार्तालाप करने का जीवंत उदाहरण प्रस्तुत करके छात्रों को हिंदी बोलने की उचित प्रेरणा दे सकते हैं। कितना अच्छा होगा यदि हिंदी के विद्यार्थी भी आपस में हिंदी में ही संवाद करने का प्रण लेकर हिंदी का पुरजोर समर्थन करेंगे। हीनता की भावना से मुक्त होकर स्कूल के भीतर और बाहर अध्यापक और छात्र गर्व से हिंदी में व्यवहार करेंगे, तो हिंदी निर्विघ्न गति से आगे बढ़ेगी।

हिंदी सेवी संस्थाएँ हिंदी के बहुआयामी प्रचार में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं। हिंदी में मौखिक अभिव्यक्ति को बढ़ावा देने के लिए संस्थाएँ भाषण-प्रतियोगिता और वाद-विवाद प्रतियोगिता का आयोजन नियमित रूप से करती हैं। प्रतिभागियों को प्रोत्साहन के रूप में प्रमाण-पत्र और पुरस्कार का वितरण किया जाता है। विजेताओं को नकद राशि प्रदान करने के अतिरिक्त उनके चित्र संस्था द्वारा प्रकाशित हिंदी पत्रिका में भी लगाए जाते हैं। संगोष्ठियों, परिचर्चाओं, कार्यशालाओं, सम्मेलनों, वेब-गोष्ठियों आदि का

आयोजन करके हिंदी सेवी संस्थाएँ हिंदी में बोलने का समुचित प्रोत्साहन प्रदान करती हैं। परन्तु इन कार्यक्रमों में अगर वक्ता एक ही वर्ग के होंगे अर्थात् हिंदी के लेखक, व्याख्याता, पत्रकार, साहित्यकार, शिक्षक, विद्यार्थी आदि भिन्न वर्ग के लोग क्रमिक रूप से वक्ता नहीं बनेंगे, तो हिंदी में बोलचाल को बढ़ावा देने का उद्देश्य सही रूप से पूर्ण नहीं होगा। हिंदी के अधिक-से-अधिक कार्यकर्ताओं को और बच्चों, किशोरों, युवाओं एवं वयस्कों को कार्यक्रमों में बोलने का समान अवसर प्रदान किया जाएगा, तो हिंदी जगत् पर अनुकूल और सकारात्मक प्रभाव पड़ेगा।

हिंदी समुदाय के लोग जब स्वेच्छा से और सहर्ष हिंदी में संवाद करते हैं तब समुदाय की शोभा में वृद्धि होती है। हिंदी भाषी अगर जान-बूझकर हिंदी नहीं बोलता है, तो हिंदी भाषा के लिए इससे बड़ा दुर्भाग्य क्या हो सकता है? हिंदी के सम्मेलन में भाग लेने वाले दो परिचित जन सम्मेलन-कक्ष में मिलते समय हिंदी की अपेक्षा यदि किसी अन्य भाषा में वार्तालाप करेंगे, तो हास्यास्पद स्थिति उत्पन्न होगी। हिंदी का प्रचार करने वाली संस्था के कार्यकर्ता संस्था के परिसर में हिंदी में बातचीत नहीं करेंगे, तो भाषा और संस्था दोनों का घोर अनादर होगा। मंदिरों या धार्मिक संगठनों में जहाँ हिंदी में प्रवचन दिया जाता है या हिंदी में धार्मिक अनुष्ठान सम्पन्न किया जाता है, वहाँ प्रवचन या अनुष्ठान से जुड़ने वाले लोग हिंदी से पृथक भाषा में व्यवहार करेंगे, तो यह विडंबनापूर्ण होगा। हिंदी की संस्थाओं में, मंदिरों में, सांस्कृतिक स्थलों पर और विशेषकर हिंदी के कार्यक्रमों में हिंदी बोलने का संकल्प भाषाई पहचान की सुरक्षा हेतु अनिवार्य कदम है।

हिंदी में बोलना वास्तव में हिंदी का सम्मान करना है और हिंदी का सम्मान करने के लिए 14 सितंबर या 10 जनवरी जैसी ऐतिहासिक तिथियों की प्रतीक्षा करने की आवश्यकता नहीं होती है। प्रतिदिन घर-परिवार में, विभिन्न स्थलों और अवसरों पर तथा विशेषकर हिंदी की संस्थाओं व गतिविधियों में हिंदी बोलने का व्रत भाषा के प्रति अनन्य प्रेम का परिचायक है। बोलचाल में हिंदी का सम्मानपूर्वक प्रयोग भाषा के गौरव की नींव को बल प्रदान करेगा और हिंदी सिरमौर बनेगी।

*डॉ. माधुरी रामधारी*
*उपमहासचिव*


प्रधान संपादक : प्रो. विनोद कुमार मिश्र

संपादक : डॉ. माधुरी रामधारी

सहायक संपादक : श्रीमती श्रद्धांजलि हजगैबी-बिहारी

टंकण टीम : श्रीमती त्रिशिला आपेगाडु, श्रीमती जयश्री सिबालक-रामसर्न, श्रीमती विजया सरजु

पता : विश्व हिंदी सचिवालय, इंडिपेंडेंस स्ट्रीट, फ़ेनिक्स 73423, मॉरीशस
World Hindi Secretariat, Independence Street, Phoenix 73423, Mauritius

फ़ोन : (230) 660 0800

ई-मेल : info@vishwahindi.com

वेबसाइट : www.vishwahindi.com

डेटाबेस : www.vishwahindidb.com

फ़ेसबुक पृष्ठ : vishwahindisachivalay/